Chapter-5

# प्रथमो विभागः

# पञ्चमं प्रकरणम्

# तुलनात्मकमध्ययनम्

# प्रथमो विभागः

## पञ्चमं प्रकरणम्

## तुलनात्मकमध्ययनम्

---

**कश्यपसंहिताया अन्यसंहितानां साकं तुलना–**

**१) बृहत्संहितायां कश्यपस्योल्लेखो वर्षागर्भलक्षणसंदर्भे स्पष्टतया दृश्यते। तद्यथा–**

तल्लक्षणानि मुनिभिर्यानि निबद्धानि तानि दृष्ट्वेदम्।
क्रियते गर्गपराशरकाश्यपवज्रादिरचितानि।।२।।

–बृ.सं.२१.२ (पृ.१५४)

**एवमेव नारदसंहितायां कश्यपस्याष्टादश ज्योतिषशास्त्रप्रवर्तकरूपेण स्पष्टतयासमुल्लेखो दृश्यते। तद्यथा–**

ब्रह्माचार्यो वसिष्ठोऽत्रिर्मनुः पौलस्त्यरोमशौ।
मरीचिरङ्गिरा व्यासो नारदः शौनको भृगुः।।२।।
च्यवनो यवनो गर्गः कश्यपश्च पराशरः।
अष्टादशैते गम्भीरा ज्योतिःशास्त्रप्रवर्तकाः।।३।।

–ना.सं. अ.१.३

एतेन इदं सिद्धं भवति –कश्यपस्य सन्मानपूर्वकं समुल्लेखो नारदसंहिताबृहत्संहितयोः प्राप्यते।

**संहितानां बाह्यस्वरूपदृष्ट्या स्थूलरूपेण तुलना-**

**(१) विविधसंहितानामध्यायसंख्या-**

१.कश्यपसंहिताया अध्यायानां संख्या ४९ वर्तते।

२.बृहत्संहिताया अध्यायानां संख्या १०७ वर्तते।

३.नारदसंहिताया अध्यायानां संख्या ५५ वर्तते।

४. वसिष्ठसंहिताया अध्यायानां संख्या ४६ वर्तते।

५. भद्रबाहुसंहिताया अध्यायानां संख्या २७ वर्तते।

अध्यायसंख्यादृष्ट्या बृहत्संहिताग्रन्थो विस्तृतो वर्तते। अन्यसंहितानामध्यायसंख्या प्रायेण कैश्चिदेवाध्यायैर्भिन्ना दृश्यते।

**(२) सम्पूर्णग्रन्थे श्लोकसंख्या-**

१.कश्यपसंहितायाः श्लोकसंख्या १,५५४ वर्तते।

२.बृहत्संहितायाः श्लोकसंख्या २,८०२ वर्तते।

३.नारदसंहितायाः श्लोकसंख्या १,२९० वर्तते।

४.वसिष्ठसंहितायाः श्लोकसंख्या – २,७१९ वर्तते।

५.भद्रबाहुसंहितायाः श्लोकसंख्या १,७७९ वर्तते।

श्लोकसंख्यादृष्ट्यापि बृहत्संहिता-वसिष्ठसंहितयोर्विषयविवेचनं विस्तृतं वर्तते।

**विविधसंहितानां विषयविवेचनमध्यायक्रमानुसारेण-**

**कश्यपसंहिता-**

(१)शास्त्रोपनयनाध्यायः(श्लो.२२) (२)सूर्यचाराध्यायः(श्लो.३६)

(३)चन्द्रचाराध्यायः(श्लो.१३) (४)भौमचाराध्यायः(श्लो.१४)

(५)बुधचाराध्याय:(श्लो.१४) (६)गुरुचाराध्याय:(श्लो.३१)

(७)शुक्रचाराध्याय:(श्लो.१४) (८)शनिचाराध्याय:(श्लो.२)

(९)राहुचाराध्याय:(श्लो.१२) (१०)केतुचाराध्याय:(श्लो.१७)

(११)अब्दलक्षणाध्याय:(श्लो.९०) (१२)तिथ्यध्याय:(श्लो.३४)

(१३)वाराध्याय:(श्लो.१९) (१४)नक्षत्राध्याय:(श्लो.५८)

(१५)योगाध्याय:(श्लो.१०) (१६)करणाध्याय:(श्लो.६)

(१७)मुहूर्ताध्याय:(श्लो.१३) (१८)उपग्रहाध्याय:(श्लो.२२)

(१९)संक्रान्त्यध्याय:(श्लो.२४) (२०)गोचराध्याय:(श्लो.१६)

(२१)चन्द्रताराबलाध्याय:(श्लो.९) (२२)सर्वलग्नाध्याय:(श्लो.४५)

(२३)प्रथमार्त्तवाधानाध्याय:(श्लो.४३) (२४)सीमन्ताध्याय:(श्लो.११)

(२५)जातकर्माध्याय:(श्लो.६) (२६)अन्नप्राशनाध्याय:(श्लो.१२)

(२७)चौलाध्याय:(श्लो.१२) (२८)उपनयनाध्याय:(श्लो.४३)

(२९)समावर्तनाध्याय:(श्लो.११) (३०)प्रश्नलक्षणाध्याय:(श्लो.१६)

(३१)कन्याप्रदानाध्याय:(श्लो.१०) (३२)एकविंशतिदोषनिरूपणाध्याय:(श्लो.९९)

(३३)विवाहाध्याय:(श्लो.११४) (३४)श्राद्धाध्याय:(श्लो.३०)

(३५)छुरिकाबन्धनाध्याय:(श्लो.१३) (३६)यात्राध्याय:(श्लो.१००)

(३७)प्रवेशाध्याय:(श्लो.९) (३८)वास्तुलक्षणाध्याय:(श्लो९७)

(३९)वास्तुपूजनाध्याय:(श्लो.२०) (४०)राजाभिषेकाध्याय:(श्लो.१४)

(४१)प्रतिष्ठाध्याय:(श्लो.१४) (४२)वस्त्रलक्षणाध्याय:(श्लो.१२)

(४३)अग्न्याधानाध्याय:(श्लो.१५) (४४)सद्योवृष्टिलक्षणाध्याय:(श्लो.१२)

(४५)काकादिसंयोगोत्पातशान्त्यध्याय:(श्लो.२४) (४६)उत्पातशान्त्यध्याय:(श्लो.९)

(४७)शिथिलीदोष-शरीरोपशान्त्यध्याय:(श्लो.२३)

(४८)निखिलोत्पातशान्त्यध्याय:(श्लो.८७) (४९)मिश्रकाध्याय:(श्लो.१७७)

**बृहत्संहिताया विषया:-**

(१)उपनयनाध्याय:(श्लो.११) (२)सांवत्सरसूत्राध्याय:(श्लो.३९)

(३)आदित्यचाराध्याय:(श्लो.४०) (४)चन्द्रचाराध्याय:(श्लो.३२)

(५)राहुचाराध्याय:(श्लो.९८) (६)भौमचाराध्याय:(श्लो.१३)

(७)बुधचाराध्याय:(श्लो.२०) (८)बृहस्पतिचाराध्याय:(श्लो.५३)

(९)शुक्रचाराध्याय:(श्लो.४५) (१०)शनैश्चरचाराध्याय:(श्लो.२१)

(११)केतुचाराध्याय:(श्लो.६२) (१२)अगस्त्यचाराध्याय:(श्लो.२२)

(१३)सप्तर्षिचाराध्याय:(श्लो.११) (१४)कूर्मविभागाध्याय:(श्लो.३३)

(१५)नक्षत्रव्यूहाध्याय:(श्लो.३२) (१६)ग्रहभक्तियोगाध्याय:(श्लो.४२)

(१७)ग्रहयुद्धाध्याय:(श्लो.२७) (१८)शशिग्रहसमागमाध्याय:(श्लो.८)

(१९)ग्रहवर्षफलाध्याय:(श्लो.२२) (२०)ग्रहशृङ्गाटकाध्याय:(श्लो.९)

(२१)गर्भलक्षणाध्याय:(श्लो.३७) (२२)गर्भधारणाध्याय:(श्लो.८)

(२३)प्रवर्षणाध्याय:(श्लो.१०) (२४)रोहिणीयोगाध्याय:(श्लो.३६)

(२५)स्वातीयोगाध्याय:(श्लो.) (२६)आषाढीयोगाध्याय:(श्लो.१५)

(२७)वातचक्राध्याय:(श्लो.९) (२८)सद्योवर्षणाध्याय:(श्लो.२४)

(२९)कुसुमलताध्याय:(श्लो.१४) (३०)सन्ध्यालक्षणाध्याय:(श्लो.३३)

(३१)दिग्दाहलक्षणाध्याय:(श्लो.५)(३२)भूकम्पलक्षणाध्याय:(श्लो.३२)

(३३)उल्कालक्षणाध्याय:(श्लो.३०) (३४)परिवेषलक्षणाध्याय:(श्लो.२३)

(३५)इन्द्रायुधलक्षणाध्याय:(श्लो.८)(३६)गन्धर्वनगरलक्षणाध्याय:(श्लो.५)

(३७)प्रतिसूर्यलक्षणाध्याय:(श्लो.३)(३८)रजोलक्षणाध्याय:(श्लो.८)

(३९)निर्घातलक्षणाध्याय:(श्लो.५) (४०)सस्यजाताध्याय:(श्लो.१४)

(४१)द्रव्यनिश्चयाध्याय:(श्लो.१३) (४२)अर्धकाण्डाध्याय:(श्लो.१४)

(४३)इन्द्रध्वजसम्पदध्याय:(श्लो.६८) (४४)नीराजनाध्याय:( श्लो.२८)

(४५)खञ्जनकलक्षणाध्याय:(श्लो.१६)(४६)उत्पाताध्याय:(श्लो.९९)

(४७)मयूरचित्राध्याय:(श्लो.२८) (४८)पुष्यस्नानाध्याय:(श्लो.८७)

(४९)पट्टलक्षणाध्याय:(श्लो.८) (५०)खड्गलक्षणाध्याय:(श्लो.२६)

(५१)अङ्गविद्याध्याय:(श्लो.४४) (५२)पिटकलक्षणाध्याय:(श्लो.१०)

(५३)वास्तुविद्याध्याय:(श्लो.१२५) (५४)दकार्गलाध्याय:(श्लो.१२५)

(५५)वृक्षायुर्वेदाध्याय:(श्लो.३१) (५६)प्रासादलक्षणाध्याय:(श्लो.३१)

(५७)वज्रलेपाध्याय:(श्लो.८) (५८)प्रतिमालक्षणाध्याय:(श्लो.५८)

(५९)वनसम्प्रवेशाध्याय:(श्लो.१४)(६०)प्रतिमाप्रतिष्ठापनाध्याय:(श्लो.२२)

(६१)गोलक्षणाध्याय:(श्लो.१९) (६२)श्वलक्षणाध्याय:(श्लो.२)

(६३)कुक्कुटलक्षणाध्याय:(श्लो.३) (६४)कूर्मलक्षणाध्याय:(श्लो.३)

(६५)छागलक्षणाध्याय:(श्लो.११) (६६)अश्वलक्षणाध्याय:(श्लो.५)

(६७)हस्तिलक्षणाध्याय:(श्लो.१०)(६८)पुरुषलक्षणाध्याय:(श्लो.११६)

(६९)पञ्चमहापुरुषलक्षणाध्याय:(श्लो.४०)(७०)स्त्रीलक्षणाध्याय:(श्लो.२६)

(७१)वस्त्रछेदनलक्षणाध्याय:(श्लो.१४) (७२)चामरलक्षणाध्याय:(श्लो.६)

(७३)छत्रलक्षणाध्याय:(श्लो.६) (७४)स्त्रीप्रशंसाध्याय:(श्लो.२०)

(७५)सौभाग्यकरणाध्याय:(श्लो.१०) (७६)कान्दर्पिकाध्याय:(श्लो.१२)

(७७)गन्धयुक्तिर्नामाध्याय:(श्लो.३७) (७८)पुंस्त्रीसमागमायोगाध्याय:(श्लो.२६)

(७९)शय्यासनालक्षणाध्याय:(श्लो.३९) (८०)रत्नपरीक्षाध्याय:(श्लो.१८)

(८१)मुक्तलक्षणाध्याय:(श्लो.३६) (८२)पद्मरागलक्षणाध्याय:(श्लो.११)

(८३)मरकतलक्षणाध्याय:(श्लो.१) (८४)दीपलक्षणाध्याय:श्लो.२)

(८५)दन्तकाष्ठलक्षणाध्याय:(श्लो.९) (८६)शाकुनाध्याय:(श्लो.८०)

(८७)अन्तरचक्राध्याय:(श्लो.४५) (८८)विरुताध्याय:(श्लो.४७)

(८९)श्वचक्राध्याय:(श्लो.२०) (९०)शिवारुताध्याय:(श्लो.१५)

(९१)मृगचेष्टिताध्याय:(श्लो.३) (९२)गवेङ्गिताध्याय:(श्लो.३)

(९३)अश्वेङ्गिताध्याय:(श्लो.१५) (९४)हस्तिचेष्टिताध्याय:(श्लो.१४)

(९५)वायसविरुताध्याय:(श्लो.६२) (९६)शाकुनोत्तराध्याय:(श्लो.१७)

(९७)पाकाध्याय:(श्लो.१७) (९८)नक्षत्रकर्मगुणाध्याय:(श्लो.१७)

(९९)तिथिकर्मगुणाध्याय:(श्लो.३) (१००)करणगुणाध्याय:(श्लो.८)

(१०१)नक्षत्रजातकाध्याय:(श्लो.१४) (१०२)राशिविभागाध्याय:(श्लो.७)

(१०३)विवाहपटलाध्याय:(श्लो.१३) (१०४)ग्रहगोचराध्याय:(श्लो.६४)

(१०५)रूपसत्राध्याय:(श्लो.१६) (१०६)उपसंहाराध्याय:(श्लो.६)

(१०७)शास्त्रानुक्रमण्यध्याय:(श्लो.१४)

**नारदसंहिताया विषया:-**

(१)शास्त्रोपनयनाध्याय:(श्लो.१६) (२)ग्रहचाराध्याय: ( श्लो.१४२)

(सू.२७-चं.१०-भौ.११-बु.१५-गु.३१-शु.९-श.६-रा.१३के.२०)

(३) संवत्सरफलाध्याय:(श्लो.७६)(४)तिथिलक्षणाध्याय:( श्लो.३८)

(५)वारलक्षणाध्याय:( श्लो.२०) (६)नक्षत्रफलाध्याय:( श्लो.६९)

(७)योगप्रकरणासध्याय:(श्लो.८) (८)करणाध्याय:(श्लो.४)

(९)मुहूर्ताध्याय:(श्लो.७)  (१०)उपग्रहाध्याय:(श्लो.२१)

(११)सङ्क्रान्तिलक्षणाध्याय:(श्लो.२६)(१२)गोचराध्याय:(श्लो.१३)

(१३)चन्द्रबलाध्याय:(श्लो.८)  (१४)सर्वलग्नाध्याय:(श्लो.२४)

(१५)प्रथमार्तवाध्याय:(श्लो.३४)  (१६)आधानाध्याय:(श्लो.५)

(१७)पुंसवनाध्याय(श्लो.१)  (१८)सीमन्तोन्नयनाध्याय:(श्लो.६)

(१९)जातकमाध्याय:(श्लो.१)  (२०)नामकरणाध्याय:(श्लो.४)

(२१)अन्नप्राशनाध्याय:(श्लो.६)  (२२)चौलाध्याय:(श्लो.८)

(२३)मङ्गलाङ्कुरार्पणं नामाध्याय:(श्लो.४)  (२४)उपनयनाध्याय:(श्लो.३५)

(२५)छुरिकाबन्धनाध्याय:(श्लो.११)  (२६)समावर्तनाध्याय:(श्लो.४)

(२७)विवाहप्रश्नलग्नाध्याय:(श्लो.१३)  (२८)कन्यावरणाध्याय:(श्लो.८)

(२९)विवाहाध्याय:(श्लो.१६२)  (३०)सुरप्रतिष्ठाध्याय:(श्लो.१९)

(३१)वास्तुविधानाध्याय:(श्लो.६२)  (३२)वास्तुलक्षणाध्याय:(श्लो.२०)

(३३)यात्राध्याय:(श्लो.९२)  (३४)प्रवेशाध्याय:(श्लो.८)

(३५)सद्योवृष्टिलक्षणाध्याय:(श्लो.१९)  (३६)कूर्मविभागाध्याय:(श्लो.६)

(३७)उत्पाताध्याय:(श्लो.१८)  (३८)वायसमैथुनलक्षणाध्याय:(श्लो.११)

(३९)पल्लीसरटाशुभस्थानशान्तिप्रकरणाध्याय:(श्लो.१३)

(४०)कपोतपिङ्गलादिशान्त्यध्याय:(श्लो.११)

(४१)शिथिलीजननशान्त्याध्याय:(श्लो.९)  (४२)निमित्तशान्त्यध्याय:(श्लो.५)

(४३)उल्कालक्षणाध्याय:(श्लो.२७)  (४४)परिवेषलक्षणाध्याय:(श्लो.१८)

(४५)इन्द्रचापलक्षणाध्याय:(श्लो.८)  (४६)गन्धर्वनगरदर्शनाध्याय:(श्लो.४)

(४७)प्रतिसूर्यलक्षणाध्याय:(श्लो.४)  (४८)निर्घातलक्षणाध्याय:(श्लो.६)

(४९)दिग्दाहलक्षणाध्याय:(श्लो.५) (५०)रजोलक्षणाध्याय:(श्लो.७)
(५१)भूकम्पलक्षणाध्याय:(श्लो.१०) (५२)नक्षत्रगुणाध्याय:(श्लो.२७)
(५३)मिश्रकाध्याय:(श्लो.२३) (५४)श्राद्धलक्षणाध्याय:(श्लो.२१ )

**वसिष्ठसंहिताया विषयानुक्रम:-**

(१)शास्त्ररूपाध्याय:(श्लो.१३) (२)अर्कचाराध्याय:(श्लो.२५)
(३)चन्द्रचाराध्याय:(श्लो.२१) (४)भौमचाराध्याय:(श्लो.१५)
(५)बुधचाराध्याय:(श्लो.१७) (६)गुरुचाराध्याय:(श्लो.१०१)
(७)शुक्रचाराध्याय:(श्लो.१९) (८)शनिचाराध्याय:(श्लो.६)
(९)राहुचाराध्याय:(श्लो.६२) (१०)केतुचाराध्याय:(श्लो.५०)
(११)वर्षेशादिनिर्णयफलाध्याय:(श्लो.५०)(१२)तिथिस्वरूपाध्याय:(श्लो.७५)
(१३)वारस्वरूपाध्याय:(श्लो.२०) (१४)नक्षत्रस्वरूपाध्याय:(श्लो.११२)
(१५)योगाध्याय:(श्लो.४१) (१६)करणाध्याय:(श्लो.१९)
(१७)मुहूर्ताध्याय:(श्लो.९) (१८)गोचराध्याय:(श्लो.१७९)
(१९)संक्रान्त्यध्याय:(श्लो.३१) (२०)चन्द्रताराबलाध्याय:(श्लो.१२)
(२१)उपग्रहाध्याय:(श्लो.१०) (२२)ग्रहकूटाध्याय:(श्लो.१४)
(२३)लग्नबलाध्याय:(श्लो.४७) (२४)आधानाध्याय:(श्लो.४८)
(२५)पुंसवमसीमन्ताध्याय:(श्लो.१७) (२६)जातकर्मनामकर्माध्याय:(श्लो.४)
(२७)अन्नप्राशनाध्याय:(श्लो.१०) (२८)चौलाध्याय:(श्लो.१२)
(२९)उपनयनाध्याय:(श्लो.७९) (३०)समावर्तनाध्याय:(श्लो.३)
(३१)विवाहप्रश्नाध्याय:(श्लो.८) (३२)विवाहाध्याय:(श्लो.२४४)
(३३)राज्याभिषेकाध्याय:(श्लो.६०) (३४)अश्वारिष्टशान्त्यध्याय:( श्लो.२३)

(३५)गजारिष्टशान्त्यध्याय:(श्लो.४६)　(३६)ग्रहणशान्त्यध्याय:(श्लो.२४)

(३७)यात्राध्याय:(श्लो.२३३)　(३८)गृहप्रवेशाध्याय:(श्लो.२४)

(३९)वास्त्वध्याय:(श्लो.२२३)　(४०)सुरप्रतिष्ठाध्याय:(श्लो.२१)

(४१)गुणनिरूपणाध्याय:(श्लो.५२)　(४२)दोषनिरूपणाध्याय:(श्लो.१४८)

(४३)गुणदोषापवादाध्याय:(श्लो.१७२)　(४४)वस्त्रपरिधानाध्याय:(श्लो.१३)

(४५)उत्पाताध्याय:(श्लो.१९३)　(४६)रोगोत्पत्तिशान्त्यध्याय:(श्लो.११४)

**भद्रबाहुसंहिताया विषयानुक्रम:-**

(१)ग्रन्थाङ्गसञ्चयाध्याय:(श्लो.२१)　(२)उल्कालक्षणाध्याय:(श्लो.१२)

(३)निमित्तशास्त्राध्याय:(श्लो.६९)　(४)परिवेषवर्णनाध्याय:(श्लो.३९)

(५)विद्युल्लक्षणाध्याय:(श्लो.२५)　(६)अभ्रलक्षणाध्याय:(श्लो.३१)

(७)सन्ध्यालक्षणाध्याय:(श्लो.२६) (८)मेघकाण्डाध्याय:(श्लो.२७)

(९)वातलक्षणाध्याय:(श्लो.६५)　(१०)वर्षणाध्याय:(श्लो.५५)

(११)गन्धर्वनगराध्याय:(श्लो.३१)　(१२)गर्भवातलक्षणाध्याय:(श्लो.३८)

(१३)राजयात्राध्याय:(श्लो.१८६)

(१४)सकलशुभाशुभव्याख्यानविधानकथनाध्याय:(श्लो.१८२)

(१५)शुक्रचार:(श्लो.२३१)　(१६) शनैश्चरचार: (श्लो.३२)

(१७)बृहस्पतिचार:(श्लो.४६)　(१८)बुधचार:(श्लो.३७)

(१९)अङ्गारकचार:(श्लो.३९)　(२०)राहुचार:(श्लो.६३)

(२१)केतुचार:(श्लो.५८)　(२२)आदित्यचार:(श्लो.२१)

(२३)चन्द्रचार:(श्लो.५८)　(२४)ग्रहयुद्धनामाध्याय:(श्लो.४३)

(२५)सङ्ग्रहयोगार्धकाण्डाध्याय:(श्लो.५०)　(२६)स्वप्नाध्याय:(श्लो.८६)

(२७)वस्त्रव्यवहारनिमित्तकोध्याय:(श्लो.१३) (२८)परिशिष्टाध्याय:(श्लो.१९५)

**कश्यपसंहिता-बृहत्संहितयोर्विषयसाम्यम्-**

एते निम्नलिखिता विषया द्वयो: समाना वर्तन्ते।

(१)शास्त्रोपनयनाध्याय: (२) सूर्यचाराध्याय: (३)चन्द्रचाराध्याय:

(४)भौमचाराध्याय: (५)बुधचाराध्याय: (६)गुरुचाराध्याय:

(७)शुक्रचाराध्याय: (८)शनिचाराध्याय: (९)राहुचाराध्याय:

(१०)केतुचाराध्याय:।

**विषयेषु भिन्नताविचार:**

कश्यपसंहितोक्ता निम्नलिखितोक्तविषया बृहत्संहितायां न वर्णिता: सन्ति।

(११)अब्दलक्षणाध्याय: (१३)वाराध्याय: (१५)योगाध्याय:

(१७)मुहूर्ताध्याय: (१८)उपग्रहाध्याय: (१९)संक्रान्त्यध्याय:

(२१)चन्द्रताराबलाध्याय: (२२)सर्वलग्नाध्याय: (२३)प्रथमार्त्तवाधानाध्याय:

(२४)सीमन्ताध्याय: (२५)जातकर्माध्याय: (२६)अन्नप्राशनाध्याय:

(२७)चौलाध्याय: (२८)उपनयनाध्याय: (२९)समावर्तनाध्याय:

(३०)प्रश्नलक्षणाध्याय: (३१)कन्याप्रदानाध्याय:

(३२)एकविंशतिदोषनिरूपणाध्याय: (३३)विवाहाध्याय:

(३४)श्राद्धाध्याय: (३९)वास्तुपूजनाध्याय: (४३)अग्न्याधानाध्याय:

(४५)काकादिसंयोगोत्पातशान्त्यध्याय: (४७)शिथिलीदोष-शरीरोपशान्त्यध्याय:

(४८)निखिलोत्पातशान्त्यध्याय: (४९)मिश्रकाध्याय:।

**२)बृहत्संहितोक्ता निम्नलिखिता विषया: कश्यपसंहितायां न वर्णिता: सन्ति।**

(२)सांवत्सरसूत्राध्याय: (१२)अगस्त्यचाराध्याय: (१३)सप्तर्षिचाराध्याय:

(१४)कूर्मविभागाध्याय: (१५)नक्षत्रव्यूहाध्याय: (१६)ग्रहभक्तियोगाध्याय:

(१९)ग्रहवर्षफलाध्याय: (२०)ग्रहशृङ्गाटकाध्याय: (२३)प्रवर्षणाध्याय:

(२४)रोहिणीयोगाध्याय: (२५)स्वातीयोगाध्याय: (२६)आषाढीयोगाध्याय:

(२७)वातचक्राध्याय: (२९)कुसुमलताध्याय: (३०)सन्ध्यालक्षणाध्याय:

(४०)सस्यजाताध्याय: (४३)इन्द्रध्वजसम्पदध्याय: (४८)पुष्यस्नानाध्याय:

(४९)पट्टलक्षणाध्याय: (५१)अङ्गविद्याध्याय: (५२)पिटकलक्षणाध्याय:

(५४)दकार्गलाध्याय: (५५)वृक्षायुर्वेदाध्याय: (५७)वज्रलेपाध्याय:

(६१)गोलक्षणाध्याय: (६२)श्वलक्षणाध्याय: (६३)कुक्कुटलक्षणाध्याय:

(६४)कूर्मलक्षणाध्याय: (६५)छागलक्षणाध्याय: (६६)अश्वलक्षणाध्याय:

(६७)हस्तिलक्षणाध्याय: (६८)पुरुषलक्षणाध्याय: (६९)पञ्चमहापुरुषलक्षणाध्याय:

(७०)स्त्रीलक्षणाध्याय: (७२)चामरलक्षणाध्याय: (७३)छत्रलक्षणाध्याय:

(७४)स्त्रीप्रसंशाध्याय: (७५)सौभाग्यकरणाध्याय: (७६)कान्दर्पिकाध्याय:

(७७)गन्धयुक्तिर्नामाध्याय:(७८)पुंस्त्रीसमागमायोगाध्याय: (८०)रत्नपरीक्षाध्याय:

(८१)मुक्तलक्षणाध्याय: (८२)पद्मरागलक्षणाध्याय: (८३)मरकतलक्षणाध्याय:

(८४)दीपलक्षणाध्याय: (८६)शाकुनाध्याय: (८७)अन्तरचक्राध्याय:

(८८)विरुताध्याय: (८९)श्वचक्राध्याय: (९०)शिवारुताध्याय:

(९१)मृगचेष्टिताध्याय: (९२)गवेङ्गिताध्याय: (९३)अश्वेङ्गिताध्याय:

(९४)हस्तिचेष्टिताध्याय: (९५)वायसविरुताध्याय: (९६)शाकुनोत्तराध्याय:

(९७)पाकाध्याय: (१०२)राशिविभागाध्याय: (१०६)उपसंहाराध्याय:।

**कश्यपसंहिता-नारदसंहितयोर्विषयसाम्यम्-**

(१)शास्त्रोपनयनाध्याय: (२) सूर्यचाराध्याय: (३)चन्द्रचाराध्याय:
(४)भौमचाराध्याय: (५)बुधचाराध्याय: (६)गुरुचाराध्याय: (७)शुक्रचाराध्याय:
(८)शनिचाराध्याय: (९)राहुचाराध्याय: (१०)केतुचाराध्याय:
(११)अब्दलक्षणाध्याय: (१२)तिथ्यध्याय: (१३)वाराध्याय: (१४)नक्षत्राध्याय:
(१५)योगाध्याय: (१६)करणाध्याय: (१७)मुहूर्ताध्याय: (१८)उपग्रहाध्याय:
(१९)संक्रान्त्यध्याय: (२०)गोचराध्याय: (२१)चन्द्रताराबलाध्याय:
(२२)सर्वलग्नाध्याय: (२३)प्रथमार्त्तवाधानाध्याय: (२४)सीमन्ताध्याय:
(२५)जातकर्माध्याय: (२६)अन्नप्राशनाध्याय: (२७)चौलाध्याय:
(२८)उपनयनाध्याय: (२९)समावर्तनाध्याय: (३०)प्रश्नलक्षणाध्याय:
(३१)कन्याप्रदानाध्याय: (३२)एकविंशतिदोषनिरूपणाध्याय: (३३)विवाहाध्याय:
(३४)श्राद्धाध्याय: (३५)छुरिकाबन्धनाध्याय: (३६)यात्राध्याय:
(३७)प्रवेशाध्याय: (३८)वास्तुलक्षणाध्याय: (३९)वास्तुपूजनाध्याय:
(४०)राजाभिषेकाध्याय: (४१)प्रतिष्ठाध्याय: (४४)सद्योवृष्टिलक्षणाध्याय:
(४५)काकादिसंयोगोत्पातशान्त्यध्याय: (४६)उत्पातशान्त्यध्याय:
(४७)शिथिलीदोष-शरीरोपशान्त्यध्याय: (४८)निखिलोत्पातशान्त्यध्याय:
(२३)मङ्गलाङ्कुरार्पणं नामाध्याय:।

**कश्यपसंहितोक्तनिम्नविषयौ नारदसंहितायां नोपलभ्येते-**

(४३)अग्न्याधानाध्याय: (४२)वस्त्रलक्षणाध्याय:।

**नारदसंहितोक्तो निम्नलिखितविषय: कश्यपसंहितायां नोपलभ्यते-**

(३६)कूर्मविभागाध्याय:।

**कश्यपसंहिताया वसिष्ठसंहितोक्तविषयैः साम्यम्-**

(१)शास्त्रोपनयनाध्यायः (२) सूर्यचाराध्यायः (३)चन्द्रचाराध्यायः

(४)भौमचाराध्यायः (५)बुधचाराध्यायः (६)गुरुचाराध्यायः (७)शुक्रचाराध्यायः

(८)शनिचाराध्यायः (९)राहुचाराध्यायः (१०)केतुचाराध्यायः

(११)अब्दलक्षणाध्यायः (१२)तिथ्यध्यायः (१३)वाराध्यायः (१४)नक्षत्राध्यायः

(१५)योगाध्यायः (१६)करणाध्यायः (१७)मुहूर्ताध्यायः (१८)उपग्रहाध्यायः

(१९)संक्रान्त्यध्यायः (२०)गोचराध्यायः (२१)चन्द्रताराबलाध्यायः

(२२)सर्वलग्नाध्यायः (२३)प्रथमार्त्तवाधानाध्यायः (२४)सीमन्ताध्यायः

(२५)जातकर्माध्यायः (२६)अन्नप्राशनाध्यायः (२७)चौलाध्यायः

(२८)उपनयनाध्यायः (२९)समावर्तनाध्यायः (३०)प्रश्नलक्षणाध्यायः

(३२)एकविंशतिदोषनिरूपणाध्यायः (३३)विवाहाध्यायः (३६)यात्राध्यायः

(३७)प्रवेशाध्यायः (३८)वास्तुलक्षणाध्यायः (३९)वास्तुपूजनाध्यायः

(४०)राजाभिषेकाध्यायः (४१)प्रतिष्ठाध्यायः (४२)वस्त्रलक्षणाध्यायः

(४५)काकादिसंयोगोत्पातशान्त्यध्यायः (४६)उत्पातशान्त्यध्यायः

(४७)शिथिलीदोष-शरीरोपशान्त्यध्यायः (४८)निखिलोत्पातशान्त्यध्यायः।

**कश्यपसंहितोक्ता निम्नलिखिता विषया वसिष्ठसंहितायां न प्राप्यन्ते -**

(३१)कन्याप्रदानाध्यायः (३४)श्राद्धाध्यायः (३५)छुरिकाबन्धनाध्यायः

(४३)अग्न्याधानाध्यायः (४४)सद्योवृष्टिलक्षणाध्यायः (४९)मिश्रकाध्यायः

**वसिष्ठसंहितोक्ता निम्नलिखिता विषयाः कश्यपसंहितायां न प्राप्यन्ते -**

(२२)ग्रहकूटाध्यायः (३५)गजारिष्टशान्त्यध्यायः (३६)ग्रहणशान्त्यध्यायः

(४६)रोगोत्पत्तिशान्त्यध्यायः।

**कश्यपसंहिताया भद्रबाहुसंहितोक्तविषयैः साम्यम्-**

(२)सूर्यचाराध्यायः (३)चन्द्रचाराध्यायः (४)भौमचाराध्यायः (५)बुधचाराध्यायः (६)गुरुचाराध्यायः (७)शुक्रचाराध्यायः (८)शनिचाराध्यायः (९)राहुचाराध्यायः (१०)केतुचाराध्यायः (२०)गोचराध्यायः (४२)वस्त्रलक्षणाध्यायः (४४)सद्योवृष्टिलक्षणाध्यायः।

**कश्यपसंहितोक्ता निम्नलिखिता विषया भद्रबाहुसंहितायां न सन्ति-**

(११)अब्दलक्षणाध्यायः (१२)तिथ्यध्यायः (१३)वाराध्यायः (१४)नक्षत्राध्यायः (१५)योगाध्यायः (१६)करणाध्यायः (१७)मुहूर्ताध्यायः (१८)उपग्रहाध्यायः (१९)संक्रान्त्यध्यायः (२१)चन्द्रताराबलाध्यायः (२२)सर्वलग्नाध्यायः (२३)प्रथमार्त्तवाधानाध्यायः (२४)सीमन्ताध्यायः (२५)जातकर्माध्यायः (२६)अन्नप्राशनाध्यायः (२७)चौलाध्यायः (२८)उपनयनाध्यायः (२९)समावर्तनाध्यायः (३०)प्रश्नलक्षणाध्यायः (३१)कन्याप्रदानाध्यायः (३२)एकविंशतिदोषनिरूपणाध्यायः (३३)विवाहाध्यायः (३४)श्राद्धाध्यायः (३५)छुरिकाबन्धनाध्यायः (३६)यात्राध्यायः (३७)प्रवेशाध्यायः (३८)वास्तुलक्षणाध्यायः (३९)वास्तुपूजनाध्यायः (४०)राजाभिषेकाध्यायः (४१)प्रतिष्ठाध्यायः (४३)अग्न्याधानाध्यायः (४५)काकादिसंयोगोत्पातशान्त्यध्यायः (४६)उत्पातशान्त्यध्यायः (४७)शिथिलीदोष-शरीरोपशान्त्यध्यायः (४८)निखिलोत्पातशान्त्यध्यायः (४९)मिश्रकाध्यायः।

**भद्रबाहुसंहितोक्ता निम्नलिखिता विषयाः कश्यपसंहितायां न सन्ति।**

(३)निमित्तशास्त्रम् (२४)ग्रहयुद्धनामाध्यायः (२५)सङ्ग्रहयोगार्धकाण्डाध्यायः (२६)स्वप्नाध्यायः (२८)परिशिष्टाध्यायः।

विषयविवेचनवर्णनेनेदं दृश्यते यत् –बृहत्संहितायां बहवो नवीना विषया विश्लेषिताः, भद्रबाहुसंहितायामपि बहवोऽन्या विषया वर्तन्ते। नारद-कश्यपयोः प्रायेण समानत्वं, तथापि क्वचिद्भिन्नविषयानां प्रतिपादनम्। वसिष्ठसंहितया साकं कश्यपस्य विषयसाम्यं तथापि वसिष्ठसंहितायां विस्तारेण विषयप्रतिपादनं वर्तते।

**संहिताग्रन्थानां मङ्गलाचरणम्-**

**१.कश्यपसंहिता-**

महेशाय नमस्तमै सच्चिदानन्दरूपिणे।
नतामरकिरीटौघप्रभाविस्फुरिताङ्घ्रये।।१।।

कश्यपसंहिताकारो भगवतः शिवस्य वन्दनेन ग्रन्थारम्भं करोति। तस्योपरि शैवसम्प्रदायस्य प्रभावो दरीदृश्यते।

**२.बृहत्संहिता-**

जयति जगतः प्रसूतिर्विश्वात्मा सहजभूषणं नभसः।
द्रुतकनकसदृशदशशतमयूखमालार्चितः सविता।।१।।

बृहत्संहिताकारः सूर्यदेवताया वन्दनेन ग्रन्थारम्भं करोति। सः सूर्योपासको ज्ञायते। अन्यग्रन्थेष्वपि वराहमिहिरः सूर्यमेव प्रायेण प्रस्तौति।

**३.नारदसंहिता-**

अणोरणुतरः साक्षादीश्वरो महतो महान्।
आत्मागुहायां निहितो जन्तोर्जयत्यतीन्द्रियः।।१।।

नारदसंहिताकारः परमात्मनः-ईश्वरस्य वन्दनेन ग्रन्थारम्भं करोति।अस्मान् स्मारयति चोपनिषद्वाक्यं- अणोरणीयान्महतो महीयान्

आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।। -कठोपनिषत् २.२०

**४. वसिष्ठसंहिता-**

प्रह्वोऽम्भोजभवामरेन्द्रनिकरस्फूर्जत्किरीटोज्वल-

ज्ज्योत्स्नालीढपदारविन्दयुगलस्तत्त्वस्वरूपो रविः।

ब्रह्माण्डोदरसंस्थिताखिलजगत्तद्ध्वान्तविध्वंसनं

यः कुर्वन्निखिलं जगत्प्रतिदिनं पर्येति कालात्मकः।।१।।

वसिष्ठसंहिताकारः कालात्मकस्य भगवतः सूर्यस्य वन्दनेन ग्रन्थारम्भं करोति।

**५.भद्रबाहुसंहिता-**

नमस्कृत्य जिनं वीरं सुरासुरनतक्रमम्।

यस्य ज्ञानाम्बुधेः प्राप्य किञ्चिद् वक्ष्ये निमित्तकम्।।१।।

भद्रबाहुसंहिताकारो जिनवन्दनेन ग्रन्थारम्भं करोति। तस्योपरि जैनसम्प्रदायस्य प्रभावो दृश्यते।

**विषयगतं वैधर्म्यम्-**

**१ पञ्चाङ्गम्-**

बृ.सं.-पञ्चाङ्गविषये तिथि-नक्षत्र-करणविषयकं विवेचनं दृश्यते, किन्तु वार-योगविषयकं विवेचनं न दृश्यते। कश्यपसंहितायां पञ्चाङ्गविषयकं विवरणं-विवेचनं पूर्णतया दृश्यते। नारदसंहितायामपि पञ्चाङ्गविषयकं विवरणं-विवेचनं पूर्णतया दरीदृश्यते। वसिष्ठसंहितायां पञ्चाङ्गविषयकं विवरणं-विवेचनं पूर्णतया दरीदृश्यते। भद्रबाहुसंहितायां पञ्चाङ्गविषयकं विवरणं-विवेचनं नैव प्राप्यते।

२ संस्काराः

बृहत्संहितायां संस्कारविषयकं विवेचनं स्वल्पमेव चौल-विवाहपटलरूपं प्राप्यते, नारदसंहितायां विवरणमुपलभ्यते, वसिष्ठसंहितायां सर्वसंस्काराणां मुहूर्तस्य पूर्णतया विवरणं प्राप्यते। कश्यपसंहितायां संस्काराणां विवेचनं वर्तते। भद्रबाहुसंहितायां संस्काराणां तन्मुहूतानां च किञ्चिन्मात्रोऽपि विचारो न प्राप्यते।

कश्यप-नारद-संहितयोः श्राद्धविषयोऽपि विवेचतः। तयोः स विशेषः। किन्तु बृहत्संहिता-वसिष्ठसंहिता-भद्रबाहुसंहितासु चायं विषयो नास्ति।

कश्यप-नारद-वसिष्ठसंहितासु सर्वलग्नाध्यायो विशिष्टः। बृहत्संहिता-भद्रबाहसंहितयोः स न दृश्यते। बृहत्संहितायां देवतामूर्तीनां विकारस्य विवरणं न दृश्यते। नारद-कश्यपसंहितयोरेतद् विवेचितम्। नारदसंहितायां मूर्तिविकार-जनितमशुभफलं तच्छान्त्यर्थं च शान्तिवर्णनं न दृश्यते। वसिष्ठ-भद्रबाहुसंहिता-योर्मूर्तिविकारजनितमशुभफलं तच्छान्त्यर्थं शान्तिवर्णनं च न दृश्यते।

**कश्यप-बृहत्संहितयोः सूक्ष्मतया प्रतिपद्यसिद्धान्ततुलना-**

**अध्यायः१**

बृहत्संहिताग्रन्थोऽनेकपूर्वसूरिणां ज्योतिषशास्त्रकाराणां सिद्धान्तान् आलोड्य तेषां मतमतान्तराणां सङ्कलनं कृत्वा स्वमतप्रतिपादनपूर्वकं वराहेण प्रणीतः। तेन कश्यपस्य महर्षेर्मतमपि विचारितम्। काश्यपसंहिताग्रन्थः केवलं स्वमतप्रतिपादनपूर्वकं ब्रह्मर्षिकश्यपेन प्रणीतः। कश्यपसंहितायां अष्टादशज्योतिषप्रवर्तकानां समुल्लेखः कृतः। किन्तु एतेषामार्षप्रवर्तकानां बृहत्संहितायां समुल्लेखो न प्राप्यते। कश्यपसंहिता आर्षग्रन्थो विद्यते। बृहत्संहिता सङ्कलितो ग्रन्थः। बृ.सं.-जगदुत्पत्तिवर्णनं, तत्र कपिलादिमुनीनां समुल्लेखो वर्तते। क.सं. न प्राप्यते। स्कन्दत्रयवर्णने बृ.सं.-

१)संहिता २)सिद्धान्तः ३) होरा इति क्रमः, किन्तु क.सं.-१) सिद्धान्तः २)जातकम् ३) संहिता। अत्र क्रमभेदो वर्तते। द्वयोरपि त्रिस्कन्धज्योतिषशास्त्रकाररूपेण प्रसिद्धिः। क.सं.- अध्यायानां विषयानुक्रमः प्रथमाध्याये निदर्शितः। बृ.सं.- अन्तिमाध्याये (अ.क्र.-१०७) कथितम्। बृ.सं.- ज्योतिषशास्त्रस्य प्रयोजनं नोक्तम्। क.सं.- ज्योतिषशास्त्रस्य प्रयोजनं सकारणं वर्णितं वर्तते। बृ.सं.-सांवत्सरसूत्राध्यायनाम्नि द्वितीयाध्याये ३९ श्लोका वर्तन्ते। अस्मिन्नध्याये दैवज्ञानां गुणदोषाः, नक्षत्रसूचकस्य दैवज्ञस्य लक्षणं -फलं चोक्तम्। गर्गादीनां विष्णुगुप्तादीनां च वचनानि लिखितानि। कश्यपसंहितायां एतद् विवेचनं न लभ्यते।

**अध्यायः-२**

बृ.सं.-त्वष्टानाम्नो ग्रहस्योल्लेखस्तस्य फलवर्णनं च कृतम्। क.सं.- एतन्न विद्यते। क.सं.-मेषादिसंक्रातीनामधिमासस्य क्षयमासस्य लक्षणं फलं च विवेचितम्। किन्तु, बृ.सं.- एतन्न विद्यते। क.सं.-सूर्यस्यार्द्राप्रवेशः, तद्वशाद् वृष्टिफलं, अन्यनक्षत्रचारवशात् फलनिरूपणं कृतम्। किन्तु बृ.सं- न विद्यते।

**अध्यायः-३**

बृ.सं.-अमावास्याविषयकं विवेचनं बृहत्संहितायां वैज्ञानिकं सोदाहरणं वर्तते। क.सं.- चन्द्रस्य अस्तावस्थायाममावास्या भवतीति विवेचितम्। क.सं.- चन्द्रशृङ्गोन्नतिविषये कथितं यत् -चन्द्रः सौम्यशृङ्गोन्नतो यदा भवेत्तदा सर्वजन्तूनां शुभदो भवेत्। बृ.सं.-चन्द्रशृङ्गोन्नतिविषये कथितं यत् चन्द्रः सौम्यशृङ्गोन्नतो यदा भवेत्तदा क्षेमं सस्यवृद्धिवृष्टिकरः। क.सं.-चन्द्रस्य याम्यशृङ्गोन्नतिर्यदा भवेत्तदा स अनिष्टकारकः। बृ.सं.-चन्द्रयाम्यशृङ्गोन्नतौ स दुर्भिक्ष-भयदः। क.सं.-

गर्गादीनामाचार्याणां मतोल्लेखो न प्राप्यते। बृ.सं.-गर्गादीनामाचार्यानां मतोल्लेखो वर्णनं च प्राप्यते।

**अध्यायः-४**

बृ.सं.-सूर्यचन्द्रचारानन्तरं राहुचारः प्रथमं कथितः। तदनन्तरं भौमचारो वर्णितः। क.सं.-क्रमेण ग्रहचारस्य वर्णनं कृतम्। क.सं.- भौमचारविषयको निस्त्रिंशमुशलनामको योगः कथितः। ततः तत्फलं दस्युशस्त्रार्घभीतिरिति वर्णितम्। बृ.सं.-भौमचारविषयकोऽसिमुशलनामको योगः कथितः। ततस्तत्फलं-दस्युगणेभ्यः पीडा, वृष्टिशस्त्रभयमिति वर्णितम्। बृ.सं.-यदा धूमयुक्तं सशिखं भौमबिम्बं दृश्यते तदा परियात्रस्थाने तन्मनुष्यान्निहन्ति। क.सं.-एतद् वर्णनं न कृतम्।

**अध्यायः-५**

बृ.सं.-बुधास्तविषयकं विवेचनं प्राप्यते। क.सं.-बुधास्तविषयकं विवेचनं न प्राप्यते। क.सं.-आषाढ-पौष-वैशाख-श्रावणमासेषु बुधोस्योदयोऽनिष्टफलदः कथितः। बृ.सं.- आषाढ-पौष-वैशाख-श्रावणमासेषु माघसहितेषु बुधोस्योदयो-ऽनिष्टफलदः कथितः। बृ.सं.- कार्त्तिक-आश्विनमासयोश्चन्द्रज उदयं व्रजेत्तदास्त्रचौराग्निरोगजलदुर्भिक्षादिभयं भवति। क.सं.-इतरेषु शुभप्रदः -इत्युक्त्वा बुधस्य शुभफलं कथितम्।

**अध्यायः-६**

बृ.सं.-द्वादशयुगस्य स्वामिनां नामादिवर्णनं कृतम्। क.सं.- द्वादशयुगस्य स्वामिनां नामादिवर्णनमब्दलक्षणाध्याये कृतम्। बृ.सं.-षष्ठिसंवत्सराणां नामानि फलानि च गुरुचाराध्याये कथितानि। क.सं.- षष्ठिसंवत्सराणां नामानि फलानि चाब्दलक्षणाध्याये कथितानि। बृ.सं.-बृहस्पतिर्यदा वर्षमध्ये द्वे नक्षत्रे विचरणं करोति

तदा शुभफलं करोति। यदा सार्धद्वयनक्षत्रेषु विचरणं करोति तदा मध्यमं फलं करोति। सार्धद्वयाधिकनक्षत्रेषु यदा विचरणं करोति तदा धान्यनाशो भवति। क.सं.- मूलपाठ एतत् वर्णनं न प्राप्यते किन्तु व.१- हस्तलिखितग्रन्थे वर्णितं यत्- वर्षमध्ये यदा जीवो राशित्रयं स्पृशेत् तदा दुर्भिक्षं राज्यभ्रंशो निश्चयेन भवेत्। क.सं.- द्वादशराशिषु गुरोर्भ्रमणेन शुभाशुभफलं विवर्णितम्। बृ.सं.- द्वादशराशिषु गुरोर्भ्रमणेन शुभाशुभफलं न विवर्णितम्। एतद् विचारणीयम्।

**अध्यायः-७**

क.सं.-अश्विन्यादिषु त्रिषु-त्रिषु नक्षत्रेषु नागादिनववीथयो भवन्ति। बृ.सं.- स्वमतानुसारेण स्वाती-भरणी-कृत्तिकादिषु नागवीथिः, रोहिणी-मृगीशीर्ष-आर्द्रासु गजवीथिः। पुनर्वसु-पुष्य-आश्लेषासु ऐरावतवीथिः। मघा-पू.फा.-उ.फा.षु वृषवीथिः। अश्विनी-रेवती-पू.भा.-उ.भा.षु गोवीथिः। श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषासु जरद्गववीथिः। अनुराधा-ज्येष्ठा-मूलेषु मृगवीथिः। हस्त-विशाखा-चित्रासु अजवीथि। पू.षा.उ.षा.नक्षत्रे द्वे दहनवीथिः - इति कथितम्। क.सं. - त्रिषु-त्रिषु नक्षत्रेषु वीथयो भवन्ति। आचार्यवराहमिहिरस्य स्वमतं पूर्णतया कश्यपेन भिन्नं वर्तते। बृ.सं.- अन्याचार्याणां मतं लिखितम्। क.सं.-अन्याचार्याणां मतं न लिखितम्। बृ.सं - दिवादृश्यमाणशुक्रस्य वर्णनं फलं लिखितम्। क.सं.- दिवादृश्यमाणशुक्रस्य वर्णनं फलं न वर्णितम्। बृ.सं.-कृत्तिकानक्षत्रभेदः, रोहिणीशकटभेद एवं तद्वशात्फलं विवर्णितम्। क.सं.-कृत्तिकानक्षत्रभेदः, रोहिणीशकटभेद एवं तद्वशात्फलं न विवर्णितम्। बृ.सं.-शुक्रस्याग्रगानां खेटानां पृथक् पृथग्वर्णनं तत्फलादेशश्च प्राप्यते। क.सं.- शुक्रस्याग्रगखेटानां पृथक् पृथग्वर्णनं तत् फलं च न प्राप्यते। बृ.सं.-शुक्रस्य वर्णो,

लक्षणं, तत्फलादेशश्च वर्णितः। क.सं.- शुक्रस्य वर्णो, लक्षणं तत्फलादेशश्च न प्राप्यते।

**अध्यायः-८**

बृ.सं.- शनैश्चरचारस्य तदुद्भवफलस्य च वर्णनं विस्तारेण २१ श्लोकैः कृतम्। क.सं.- अत्यन्तं स्वल्पं वर्णनं प्राप्यते। बृ.सं.- शनैश्चरस्य बिम्बस्य वर्णलक्षणफलं विवृतम्। क.सं.-शनैश्चरस्य बिम्बस्य वर्णलक्षणफलं न प्राप्यते।

**अध्यायः-९**

बृ.सं.- राहुग्रहविषयकानां विविधाचार्याणां च मतोल्लेखं कृत्वा तत्खण्डनं कृतम्। स्वमतं च प्रस्थापितम्। वैज्ञानिकं मतं स्थापयता तेन भूच्छाया चन्द्रग्रहणस्य कारणं भवति, न तु राहुग्रह इति स्पष्टीकृतम्। तथा च राहुविषयिकी सर्वशास्त्र-जनमान्यता तेन निराकृता। क.सं.- किमपि मतमतान्तरं न प्राप्यते। केवलं स्वमतमेव प्रदर्शितम्। क.सं.- वेलाहीनं तथातिवेलायां सूर्येन्दुग्रहणं तत्फलं च वर्णितम्। बृ.सं.- वेलाहीनं तथातिवेलायां सूर्येन्दुग्रहणं गाणितिकदृष्ट्या नैव संभाव्यते। एतद् गणितज्ञाः स्पष्टतया जानन्ति। बृ.सं.-दशविधा ग्रासभेदाः फलेन सह वर्णिताः सन्ति। क.सं.- दशविधा ग्रासभेदाः कथिताः, किन्तु तेषां नामानि फलानि च न वर्णितानि।

बृ.सं.-भौमादिग्रहाणां ग्रहणं तत्फलं च विशदीकृतम्। क.सं.- भौमादिग्रहाणां ग्रहणं तत्फलं च न कथितम्। बृ.सं.-कार्त्तिकादिषु मासेषु ग्रहणस्य फलं विशदीकृतम्। क.सं- कार्त्तिकादिषु मासेषु ग्रहणस्य फलं न कथितम्। बृ.सं.- ग्रहणानन्तरं सप्तदिनाभ्यन्तरे विविधोत्पातानां वर्णनं तत् फलं च विशदीकृतम्। क.सं- ग्रहणानन्तरं सप्तदिनाभ्यन्तरे विविधोत्पातानां वर्णनं तत् फलं च न प्राप्यते।

**अध्यायः-५**

बृ.सं.- गर्ग-पराशर-असित-देवलादीनामन्येषां च शिखिचारं दृष्ट्वा स्वविवरणं प्रस्तुतम्। क.सं.-केवलं स्वमतं प्रस्तुतम्। बृ.सं.- दिव्य-भौम-अन्तरिक्षजकेतूनां ज्ञानं गणितशास्त्रेण न शक्यं भवति। क.सं.- अयं विचारो न प्रस्तुतः। बृ.सं.- केतुदर्शनान्तरं त्रिपक्षकालानन्तरं तत् फलं प्राप्यते। क.सं.-यावद् दिनपर्यन्तं केतुराकाशे दृश्यते तावन्मासपर्यन्तं तत् फलं प्राप्यते। बृ.सं.-केतूनामनेकविधा संख्या कथिता। क.सं.-एकोऽपि बहुरूपेण केतुर्दृश्यत इति कथितम्। बृ.सं.- अश्विन्यादिषु समुत्थितानां केतूनां वर्णनं कृतम्। क.सं.-केवलं कृत्तिकासु – इति समुल्लेखं करोति।

**कश्यप-नारदसंहितयोः सूक्ष्मतया प्रतिपद्यसिद्धान्ततुलना-**

**अध्यायः-१**

अष्टादशप्रवर्तकानां नामावलिः प्रायेण समानरूपा, तथापि नामद्वयेषु भेदो दृश्यते। तद्यथा- तत्र क. सं. सूर्यः-पौलिशः इति स्थाने ना.सं. आचार्यः पौलस्त्य इति भेदः। शेषं विषयविवेचनं प्रायेण समानं दृश्यते। केवलं शब्दभेदः। अनेके श्लोकाः प्रायेण समाना दृश्यन्ते।

**अध्यायः-२**

वर्षेशादिविषयका केचन श्लोकाः नारदेन सूर्यचारे संगृहीताः। कश्यपस्तान् अब्दलक्षणाध्याये पठितवान्। क.सं.-सूर्यचाराध्याये सौम्य-याम्यायनलक्षणफलविवेचनं कृतम्। ना.सं.-सूर्यचाराध्याये सौम्य-याम्यायनलक्षणफलविवेचनं न कृतम्।

क.सं.- सूर्यादिनवग्रहचाराणां विषये भिन्न-भिन्नाध्यायेषु विवेचनं वर्तते। ना.सं.- सूर्यादिनवग्रहचाराणां विषय एकस्मिन्नेव द्वितीयेऽध्याये विवेचनं वर्तते। क.सं.-

सूर्यस्य नक्षत्रचारवशात्फलादेशवर्णनं प्राप्यते। ना.सं.-सूर्यस्य नक्षत्रचारवशात्फला-देशवर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- सूर्यमण्डलगास्त्रयस्त्रिंशद्राहुसुतास्तामसाख्याः केतवस्तेषां वर्णनं फलादेशश्च वर्णितः। ना.सं.- सूर्यमण्डलगात्रयस्त्रिंशद्राहुसुतास्तामसाख्याः केतवस्तेषां वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-पर्वभिन्ने सूर्येन्दुग्रहणं तत् फलं च वर्णितम्। ना.सं.-पर्वभिन्ने सूर्येन्दुग्रहणं तत् फलवर्णनं च न प्राप्यते।

**अध्यायः-३**

क.सं.-दक्षिणशृङ्गोन्नतावशुभफलमुक्तम्। ना.सं.-दक्षिणशृङ्गोन्नतौ मीन-मेषस्थेऽशुभफलमुक्तम्। क.सं.-चन्द्रस्योदयास्तविषयकं वर्णनं प्राप्यते। ना.सं.-चन्द्रस्योदयास्तविषयकं वर्णनं न प्राप्यते। ना.सं.-चन्द्रस्य नक्षत्रवशादेवं राशिचारवशात् फलस्योल्लेखो वर्तते। क.सं.-चन्द्रस्य केवलं नक्षत्रचारवशात् फलस्योल्लेखो वर्तते। क.सं.-समस्तनक्षत्रेषु याम्यगस्य चन्द्रस्य शुभफलं प्रोक्तम्। ना.सं.-समस्तनक्षत्रेषु याम्यगस्य चन्द्रस्योल्लेखो न प्राप्यते। क.सं.-अधोमुखश्चन्द्रो यदा भवेत्तदा राजहानिर्भवेत्। ना.सं.-अधोमुखश्चन्द्रो यदा भवेत्तदा शस्त्रभयं भवेत्।

चन्द्रशृङ्गवेधस्य फलम्- १)मङ्गलः- क.सं.-हन्ति प्रत्यन्तभूमिपान्। ना.सं.-क्षेमनाशो भवति। २)बुधः- क.सं.-दुर्भिक्षवृष्टिभयकृद्भवेत्। ना.सं.-अर्घनाशो भवति। ३)गुरुः- क.सं.-श्रेष्ठनृपतिनाशो भवेत्। ना.सं.-वृष्टिनाशो भवति। ४)शुक्रः- क.सं.-अल्पनृपान्नाशयति। ना.सं.-नृपवर्गनाशो भवति। ५)शनिः- क.सं.-अस्त्रभयदो भवेत्। ना.सं.-जननाशो भवति।

क.सं.-चन्द्रस्य शुक्ल-कृष्णपक्षयोर्वृद्धि-क्षयवशाद् विप्र-राज्ञयोर्वृद्धि-हानी कथिते। ना.सं.-चन्द्रस्य शुक्ल-कृष्णपक्षयोर्वृद्धि-क्षयवशाद् विप्र-राज्ञयोर्वृद्धि-हानी न

कथिते। क.सं.- प्रालेयकुन्दकुसुममुक्तास्फटिकसन्निभं चन्द्रमण्डलं सर्वजन्तूनां क्षेमारोग्य-सुभिक्षकारकं भवति। ना.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते।

**अध्यायः-४**

क.सं.-१०-११-१२ नक्षत्रेषु वक्रित्वे कुजे वक्रमस्रमुखं नामको योगो भवति। स योगो रस-वृद्धिविनाशको भवति। ना.सं.-१०-११-१२ नक्षत्रेषु वक्रित्वे कुजे वक्रमल्पसुखं नामको योगो भवति। स योगो वृष्टिविनाशको भवति। क.सं.-भौमस्य बिम्बवशात् शुभाशुभफलं वर्णितम्। ना.सं.-भौमस्य बिम्बवशात् शुभाशुभफलं न वर्णितम्।

**अध्यायः-५**

क.सं.-चन्द्रस्य बिम्बवर्णने वज्रमौक्तिककुन्देन्दुकुमुदस्फटिकोपमाः - इति बहुविधं वर्णनं कृतम्। ना.सं.-चन्द्रस्य बिम्बवर्णने केवलं रजतस्फटिकोपमः- इत्येव वर्णनं कृतम्। शेषं समानं वर्तते।

**अध्यायः-७**

क.सं-याम्यमार्गगामी शुक्रो दुर्भिक्षदः। सौम्यमार्गगामी शुक्रः सुभिक्षदः। ना.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- बुधः शुक्रस्य समीपस्थो महीमेकार्णवां करोति। तयोर्मध्यगतः समुद्रमपि शोषयेत्। ना.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- एकराशिगाश्चत्वारः पञ्च वा ग्रहास्तद्बलाबलवशाद् भूपानामाहवप्रदा भवन्ति। ना.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-शुक्रस्य वक्रगते फलं विवर्णितम्। ना.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते। ना.सं.- शुक्रबिम्बवर्णवशाद् विविधफलं विवर्णितम्। क.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते।

**अध्यायः-६**

क.सं.-गुरुचारवशात् प्रभावाद्याः संवत्सरा भवन्ति- इति स्पष्टतयोक्तम्। ना.सं.- स्पष्टतया नोक्तम्। शेषं समानं वर्तते।

**अध्यायः-७**

ना.सं.- सकलनक्षत्रेषु शनैश्चरचारफलं चोक्तम्। क.सं.- केषुचिन्नक्षत्रेषु शनैश्चरचारफलं वर्णितम्। अपरेषां नक्षत्राणां चारफलं केवलं व.१ -हस्तप्रतौ प्राप्यते। ना.सं.- नक्षत्रपुरुषकल्पना तथा तत्फलं च वर्णितम्। क.सं.- नक्षत्रपुरुषकल्पना तथा तत्फलं च नोपवर्णितम्। ना.सं.-शनैश्चरस्य वक्रगतेः, मध्यमगतेस्तथा शीघ्रगतेः फलं विवेचितम्। क.सं.- एतन्न विवेचितम्। क.सं.-सम्पूर्णसंहितायामयमत्यन्तं लघुस्वरूपोऽध्यायः। अध्यायेऽस्मिन्केवलं सार्धैकसंख्याश्लोकः प्राप्यते। ना.सं.- षट्सु श्लोकेषु शनैश्चरचारवर्णनं नारदसंहितायां प्राप्यते।

**अध्यायः-९**

ना.सं.-ग्रहणे सप्तपर्वेशा ब्रह्मा-इन्द्र-चन्द्र-कुबेर-वरुण-अग्नि-यमाः क्रमेण कथिताः। क.सं.- ग्रहणे सप्तपर्वेशा ब्रह्मा-चन्द्र -इन्द्र -कुबेर-वरुण-अग्नि-यमाः- इति क्रमेण कथिताः। अत्रेन्द्र-चन्द्रयोः स्थानपरिवर्तनं दृश्यते। क.सं.-ग्रहणप्रसङ्गे कथितं यत्- वेलाहीने ग्रहणे गर्भभयं, अतिवेलार्घनाशिनी भवेत्। ना.सं.-ग्रहणप्रसङ्गे कथितं यत्- वेलाहीने ग्रहणे सस्यहानिः, नृपाणां दारुणं रणम्, अतिवेलायां पुष्पहानिः, सस्यविनाशनमिति फलं कथितम्।

नारद-कश्यपसंहितयोरनेके श्लोकाः समानरूपा दरीदृश्यन्ते। कश्यपस्य नारदोपरि प्रभावोऽनुमीयते। उभयोः संहितासु परस्परसमुल्लेखो दृश्यते तेन च प्रायेण नारदकश्यपौ समानकालीनौ स्यातामिति संभाव्यते।

**अध्यायः-१०**

नारदसंहिता-कश्यपसंहितयोः केतुचारवर्णनं प्रायेण समानं दृश्यते।

**कश्यप-वसिष्ठसंहितयोः सूक्ष्मतया प्रतिपद्यसिद्धान्ततुलना-**

**अध्यायः-१**

कश्यपोक्तसंहिता कश्यपसंहिता नाम्ना विख्याता। किन्तु वशिष्ठ-संहिताकारः स्वयमेव संहिताया नामधेयं जगन्मोहनसंज्ञया नामाभिधानं करोति। व.सं.-ज्योतिषशास्त्रं केवलं ब्राह्मणैरेवाध्येतव्यम्। इति विशेषतो वशिष्ठसंहितायां निर्दिष्टं, न तथा निर्देशः कश्यपसंहितायां कृतः। क.सं.- पुण्यमायुर्यशस्करं ज्योतिषशास्त्रज्ञान-फलमुक्तम्। किन्तु व.सं. चतुर्विधपुरुषार्थफलं वर्णितम्। व.सं.-दैवज्ञगुणदोषा वर्णिताः सन्ति। क.सं.- न वर्तते। व.सं.-अष्टादशज्योतिषशास्त्रप्रवर्तकानां समुल्लेखो न कृतः। क.सं.- संपूर्णतायाष्टादशप्रवर्तकानां समुल्लेखः कृतः।

**अध्यायः-२**

व.सं.-अयन-ऋतुवर्णनं विशदीकृतम्। क.सं.-अस्योल्लेखो न कृतः। सूर्यस्य दिवार्द्राप्रवेशफलम्- व.सं.-जगद्विपत्तिः, सस्यनाशोऽल्पवृष्टिफलं वर्णितम्। क.सं.-केवलं सस्यनाशो वर्णितः। क.सं.-सन्ध्यासमयेऽर्धरात्रावार्द्राप्रवेशस्तत् फलं च वर्णितम्। व.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते। व.सं.-राहुसुतानां केतूनां संख्यानिर्देशो न विद्यते। क.सं.- त्रयस्त्रिंशद्राहुसुता इति निर्देशो वर्तते। व.सं.-सूर्यस्य बिम्बे छिद्राणि, तोरणाकृति-कुम्भाकृति-छत्राकारादिकं वर्णनं न कृतम्। क.सं.-एतादृशं वर्णनं प्राप्यते। व.सं.-पर्वभिन्नस्य सूर्येन्दुग्रहणस्योल्लेखः फलं च न वर्णितम्। क.सं.- पूर्वोक्तं संपूर्णं

वर्णनं कृतमस्ति। वसिष्ठसंहितायां विषयविवेचनं विस्तृतं वर्तते। कश्यपसंहितायां नाधिकं न स्तोकं किन्त्वावश्यकं वर्णनं स्वल्पशब्दैः सरलभाषाशैल्या कृतम्।

**अध्यायः-३**

व.सं.-मेषादिराशिस्थितस्य चन्द्रस्य हतशृङ्गवशात् फलादेशः कृतः। क.सं.-मेषादिराशिस्थितस्य चन्द्रस्य हतशृङ्गवशात् फलादेशो न कृतः। व.सं.-व्रीहियवाकारचन्द्रशृङ्गवशाद् वृष्टिर्महदर्घता फलं निर्दिष्टं, पिपीलिकासदृशे पूर्वफलनाशो (शुभफलनाशो) भवेत्। व.सं.-यवाकारचन्द्रशृङ्गवशाद् वृद्धिः, पिपीलिकासदृशे हानिः फलं निर्दिष्टम्।

भौमादिग्रहाणां चन्द्रशृङ्गवेधफलम्- १)मङ्गलः- क.सं.-हन्ति प्रत्यन्तभूमिपान्। व.सं.-क्षुच्छस्त्रभीतिरतुला भवेत्। २)बुधः- क.सं.-दुर्भिक्षवृष्टिभयकृद्भवेत्। व.सं.-समानं वर्णनं वर्तते। ३)गुरुः- क.सं.-श्रेष्ठनृपतिनाशो भवेत्। व.सं.- समानं वर्णनं वर्तते। ४)शुक्रः-क.सं.-अल्पनृपानां नाशो भवेत्। व.सं.-सर्वे नृपवर्गा नियतकार्यरता भवन्ति। ५)शनिः- क.सं.-अस्त्रभयदो भवेत्। व.सं.-किरातानां हानिर्भवति। क.सं.-समस्तधिष्ण्यानां याम्यगो चन्द्रः शुभदो भवेत्। व.सं.-समस्तधिष्ण्यानां याम्यगश्चन्द्रोऽशुभदो भवेत्।

क.सं.-समस्तधिष्ण्यानां सौम्यगचन्द्रवर्णनं न वर्तते। व.सं.-समस्तधिष्ण्यानां सौम्यगश्चन्द्रः शुभदो भवेत्। व.सं.- चन्द्रस्य नक्षत्रचारवशाद् रत्न-जीव-धातु-मूल-ऊर्ण-कर्पूर-इत्यादिवस्तूनां महदर्घत्वसमर्घत्वयोर्वर्णनं वर्तते। क.सं.- चन्द्रस्य नक्षत्रचारवशाद् रत्न-जीव-धातु-मूल-ऊर्ण-कर्पूर-इत्यादिवस्तूनां महदर्घत्व-समर्घत्वयोर्वर्णनं न वर्तते।

**अध्यायः-४**

क.सं.- भौमस्य ७-८-९ नक्षत्रे वक्रित्वे, तद् वक्रमुष्णसंज्ञं कथितम्। तस्य फलम् -आमयाग्निभयप्रदत्वं भवति। व.सं.-भौमस्य ७-८-९ नक्षत्रे वक्रित्वे, तद् वक्रं मुख्याह्वयमेव कथितम्। तस्य फलं वह्निव्याधिभयप्रदत्वं भवति।

**अध्यायः-५**

क.सं.-बुधोदयविषये कथितं यत्- सौम्यो विनोत्पातेन सर्वदोदयं न व्रजेत्। व.सं.- बुधोदयविषये कथितं यत्- कदाचित् विनोत्पातेन बुध उदयं व्रजेत्। क.सं.- बुधस्य बिम्बवर्णने विविधानि विशेषणानि वर्ण्यन्ते - यथा- वज्रमौक्तिककुन्देन्दुकुमुदस्फटिकोपमः। व.सं.-वसिष्ठसंहितायामधिकानि विशेषणानि प्रयुज्यन्ते। तानि यथा- माणिक्यशङ्खकनकामलपुष्परागकुन्देन्दुसन्मरकतोपम-शुद्धकान्तिः।

**अध्यायः-६**

व.सं-प्रभवादिसंवत्सराणां वर्णनं फलं च गुरुचाराध्याये कथितम्। क.सं-प्रभवादिसंवत्सराणां वर्णनं फलं चाब्दलक्षणस्य स्वतन्त्राध्याये कथितम्। शेषं प्रायेण समानं प्राप्यते।

**अध्यायः-७**

व.सं.-शुक्रेण रोहिणी-मघानक्षत्रयोर्भेदनं, तत् फलं च विवृतम्। क.सं.-शुक्रेण रोहिणी-मघानक्षत्रयोर्भेदनं तत् फलं न विवृतम्। व.सं.-शुक्रस्य बिम्बकान्तिवर्णनवशात् फलं निरूपितम्। क.सं.-एतत् फलं न विवृतम्।

**अध्यायः-८**

व.सं.- अश्विन्यादिविविधनक्षत्रेषु शनैश्चरचारस्य काश्मीरादिदेशभेदेन विविधफलं प्रदत्तम्। क.सं.- अश्विन्यादिविविधनक्षत्रेषु शनैश्चरचारस्य

काश्मीरादिदेशभेदेन विविधफलं न प्राप्यते। व.सं.- मेषादिविविधराशिषु शनैश्चरचारस्य विविधफलं प्रदत्तम्। क.सं.- मेषादिविविधराशिषु शनैश्चरचारस्य विविधफलं न प्राप्यते।

**अध्यायः-९**

व.सं.-राहुग्रहस्योत्पत्तिविषये पौराणिकं विस्तृतं रोचकं वर्णनं प्राप्यते। क.सं.- आवश्यकमेव वर्णनं प्राप्यते। अधिकविस्तारो नास्ति। व.सं.-सूर्यचन्द्रोपरागानन्तरं पुनस्तस्मिन्नेव समये तयोर्ग्रहणं भवेत्तदा संपूर्णराष्ट्रस्य नाशो जायते। क.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते। व.सं.-भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनैश्चर-ग्रहाणां ग्रहणं, तत् फलं च वर्णितम्- इति वैशिष्ट्यम्। क.सं.- एतद् विवरणं न प्राप्यते।

**अध्यायः-१०**

व.सं.-गणितज्ञानेन केतूनामुदयास्तमयज्ञानं न शक्यं भवति। क.सं.- एतद् विषये न लिखितम्। व.सं.- केतुचाराध्याय उल्का-परिवेश-इन्द्रधनुः-गन्धर्वनगरादीनामुत्पातानां वर्णनं फलसहितं कथितम्। क.सं.- केवलं केतुविषयकं विवरणं प्राप्यते। व.सं.-अश्विन्यादिनक्षत्रेषूदितानां केतूनां वर्णनं, तत् फलं च कथितम्। क.सं.-एतन्न प्राप्यते।

**पञ्चाङ्गविषयकं विविधसंहितानां विवेचनम्-**

**१.तिथिः**

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१२**

**बृहत्संहिता अध्यायः-९९**

बृ.सं.- तिथिसंज्ञाविषये तृतीयासंज्ञा विजया लिखिता। क.सं.- तिथिसंज्ञाविषये तृतीयासंज्ञा जया लिखिता। प्रायेण सर्वत्र जयेत्येव प्रसिद्धम्। बृ.सं.-यत् कार्यं यन्नक्षत्रे

विहितं तत् तद्दैवत्यासु तिथिषु कर्तव्यम्-इति कथितम्। क.सं.-विविधतिथिषु कर्तव्याकर्तव्यकर्मणां सविस्तरं स्वतन्त्रं केवलतिथीनां सम्बन्धे कथितम्। क.सं.-रन्ध्रतिथीनां ज्ञानपूर्वकं त्याज्यात्याज्यविवेकः स्पष्टीकृतः। बृ.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- तिथ्यादिषु कर्तव्याकर्तव्यस्य विधिनिषेधस्तथा तत्र विविधकर्मणां-दन्तधावन- स्त्रीसेवन- क्षुरक्रिया- तैलाभ्यङ्ग- आमलकस्नान-इत्यादीनां शुभाशुभफलं निरूपितम्। बृ.सं.- एतद् वर्णनं न प्राप्यते।

क.सं.-अमावास्याभेदः १)सिनीवाली-चन्द्रवती २)कुहू-नष्टचन्द्रा -इति प्रदर्शितः। बृ.सं.- एतद् वर्णनं तिथ्यध्याये न प्राप्यते। क.सं.- मन्वादितिथयस्तथा कृतादिचतुर्युगाणां प्रारम्भतिथयः, तासां महत्त्वं च विवर्णितम्। बृ.सं.-एतद् वर्णनं तिथ्यध्याये न प्राप्यते। क.सं.-गजच्छायामुहूर्तस्य विवेचनं प्रदत्तम्। बृ.सं.-गजच्छायामुहूर्तस्य विवेचनं तिथ्यध्याये न प्राप्यते। क.सं.-एकस्यां तिथौ द्वौ करणौ भवतः, अथवा तिथ्यर्धं करणं स्मृतम्। बृ.सं.-एतद् वर्णनं न प्राप्यते।

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१२**

**नारदसंहिता अध्यायः-४**

क.सं.-लोहास्मवृक्षशय्यादिकं,चित्तप्रेष्यासवादिकर्म तथा रणोपकरणं क्षेत्रं प्रतिपदि कर्तव्यमुक्तम्। ना.सं.-भिन्नरूपेण – चित्रलेख्यासवक्षेत्रतैलशय्यादिकं, वृक्षच्छेदो गृहाश्मकर्म प्रतिपदि विहितम्। क.सं.-पक्षरन्ध्रातिथिषु न्यूनं दशनाडिकाः शुभकर्मणि त्याज्याः। ना.सं.- पक्षरन्ध्रातिथिषु क्रमेण- ४-१४-७-९-५नाड्यः शुभकर्मणि त्याज्याः। क.सं.- गजच्छायामुहूर्ते मासस्य उल्लेखो न कृतः। ना.सं.-गजच्छायामुहूर्ते भाद्रपदमासस्य उल्लेखो कृतः।

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१२**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः-१२**

क.सं.-पक्षरन्ध्रातिथिषु न्यूनं दशनाडिकाः शुभकर्मणि त्याज्याः। व.सं.-पक्षरन्ध्रातिथिषु क्रमेण- ५-१४-८-१५नाड्यः शुभकर्मणि त्याज्याः। व.सं.-विविधमासेषु तिथ्यनुसारेण प्रचलितानां विविधव्रतोत्सवानां विस्तृतं विवरणं प्राप्यते। क.सं.- एतद्विषये संक्षेपेण विवरणं कृतम्।

२.वारः

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१३**

**बृहत्संहितायां वारविषयकं विवेचनं न दृश्यते।**

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१३**

**नारदसंहिता अध्यायः-४**

क.सं.- तिथेर्वारो बलाधिकः -इति वारस्य प्राधान्यं प्रतिपादितम्। ना.सं.-एतद् वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-वारविषयेऽभ्यङ्गस्य रविवारादिक्रमेण यथा- क्लेश-कान्ति-मद-लक्ष्मी-धन-हानि-सौभाग्यताफलं विवर्णितम्। ना.सं.- वारविषयेऽभ्यङ्गस्य रविवारादिक्रमेण यथा- क्लेश-कान्ति-व्याधि-सौभाग्य-नैःस्व-हानि-सर्वसमृद्धिफलं विवर्णितम्।

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१३**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः-१३**

क.सं.- तिथेर्वारो बलाधिकः -इति वारस्य प्राधान्यं प्रतिपादितम्। व.सं.-एतत् वर्णनं न प्राप्यते। व.सं.-चन्द्रवासरे रविवारोक्तं चन्द्रवारोक्तं च कर्म कर्तव्यमिति निर्दिष्टम्। क.सं.-केवलं चन्द्रवारोक्तं कर्म कर्तव्यमिति निर्दिष्टम्।

क.सं.-वारविषयेऽभ्यङ्गस्य रविवारादिक्रमेण यथा- क्लेश-कान्ति-मद-लक्ष्मी-धन-हानि-सौभाग्यताफलं विवर्णितम्। व.सं.-वारविषयेऽभ्यङ्गस्य रविवारादिक्रमेण यथा-दुःख-कान्ति-निधन-श्रीकीर्ति-शत्रुवृद्धि-रोग-भोगारोग्यादिफलं विवर्णितम्। व.सं.-ग्रहणं विनानुक्तवारादिष्वमायां-विष्टि-पातयोरौषधेन युतं तैलं न दुष्यति। क.सं.-अयं परिहारो न प्राप्यते। व.सं.- ग्रहस्य वर्णविषये कथितं यद् बुधस्य वर्णः पीतः। क.सं.-बुधस्य वर्णविषये दूर्वाछविर्बुधः -इति वर्णितम्। व.सं.-सूर्यादिवारभेदेन वस्त्रधारणे फलं विवृतम्। क.सं.-एतद्विषयकं वर्णनं वस्त्रलक्षणाध्याये लिखितम्। व.सं.-कालहोरावर्णनं प्राप्यते। क.सं.-कुलिक-यमघण्ट-अर्धयाम-कालहोरादिकं गणितागतं सफलं विवेचनं प्राप्यते।

**३.नक्षत्राणि-**

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१४**

**बृहत्संहिता अध्यायः-१०१**

· बृ.सं.-अश्विन्यादिविविधनक्षत्रजातानां फलनिरूपणं प्राप्यते। क.सं.-अश्विन्यादिविविधनक्षत्रजातानां फलनिरूपणं मिश्रकाध्याये प्राप्यते। क.सं.-नक्षत्रवशतो विविधकर्माणि कर्तव्याकर्तव्यानि समुहूर्तं कथितानि। बृ.सं.-एतद्वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- नक्षत्राणां विविधाः संज्ञाः- तिर्यङ्गमुख-अधोमुख-ऊर्ध्वमुख-चर-स्थिर-मिश्र-मृदु-क्षिप्रादिकास्तद्वशात्कर्माणि च विवर्णितानि सन्ति। बृ.सं.-एतद्विषयकं विवेचनं दृश्यते। क.सं.- त्रिपुष्करयोगविवेचनं प्राप्यते। बृ.सं.- त्रिपुष्करयोगविषयकं विवेचनं न दृश्यते। क.सं.-नक्षत्राणां विशेषवृक्षास्तद्वृक्षपूजनम्, अरिवृक्षपीडनं च विवर्णिनम्। बृ.सं.-नक्षत्राणां विशेषवृक्षास्तद्वृक्षपूजनम्, अरिवृक्षपीडनादिविषयकं

विवेचनं न प्राप्यते। क.सं.-नक्षत्राणां स्वामिनो देवताः कथिताः। बृ.सं.- नक्षत्राणां स्वामिनो देवतानां वर्णनं न प्राप्यते।

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१४**

**नारदसंहिता अध्यायः-६**

ना.सं.-नक्षत्राणां तारकाणां संख्याल्लेखः प्राप्यते। क.सं.- नक्षत्राणां तारकाणां संख्याल्लेखो न प्राप्यते। ना.सं.-अश्वानां सर्वकर्म शुक्रस्य वासरे कर्तव्यम्। क.सं.- अश्वानां सर्वकर्म सूर्यस्य वासरे कर्तव्यम्।

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१४**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः-१४**

व.सं.-अध्यायेऽस्मिन् नक्षत्रविषयकाः विविधमुहूर्ताः यथा- वस्त्रधारणं, विद्यारम्भः, अन्नप्राशनं, धननाशकनक्षत्राणि, सर्पदंशे मरणदायकानि नक्षत्राणि, विविधनक्षत्रेषूत्पन्नरोगस्य फलविवेचनं, रोगमुक्तिविचारः, रोगशान्त्यर्थं शिवपूजनविधिश्च कथितः। अन्यविषयाः- यात्रा, गवां क्रयविक्रयः, राजदर्शननक्षत्राणि, क्षौरकर्मविवेचनं, भौमादिभिर्विद्धनक्षत्रचिन्तनं, उत्पातदूषितनक्षत्रं, आभूषणधारणे नक्षत्रम्, इत्यादिकं मुहूर्तविवेचनं विस्तारेण विवर्णितं दृश्यते। क.सं.- एतद् विवेचनमस्मिन्नध्याये न प्राप्तम्। व.सं.-अतीव विस्तृतं वर्णनमस्मिन्नध्याये। क.सं.- न संक्षेपेन नाधिकेन, किन्तु विषयवस्तुमुद्दिश्य वर्णनं सरलभाषया सुन्दरशैल्या निर्दिष्टम्।

**४.योगः**

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१५**

**बृहत्संहितायामयमध्यायो न प्राप्यते।**

**कश्यपसंहिता अध्यायः–१५**

**नारदसंहिता अध्यायः–७**

क.सं.–योगानां स्वामिनां वर्णने विविधमतान्तराणि दृश्यन्ते–

| क्र. कश्यपसंहितोक्ताः | नारदसंहितोक्ताः |
|---|---|
| १. कालः | यमः |
| २. विष्णुः | विष्णुः |
| ३. चन्द्रः | चन्द्रः |
| ४. पितामहः | ब्रह्मा |
| ५. जीवः | बृहस्पतिः |
| ६. राक्षसः | चन्द्रमाः |
| ७. देवेन्द्रः | इन्द्रः |
| ८. कालः | जलम् |
| ९. अग्निः | सर्पः |
| १०. अर्कः | अग्निः |
| ११. भूमिः | सूर्यः |
| १२. मरुत् | भूमिः |
| १३. गजः | वायुः |
| १४. जलाधीशः | शिवः |
| १५. गणेशः | वरुणः |
| १६. शिवः | गणेशः |
| १७. धराधिपः | रुद्रः |

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

| | |
|---|---|
| १८. त्वष्टा | कुबेरः |
| १९. मित्रः | त्वष्टा |
| २०. अश्विनीकुमारः | मित्रः |
| २१. मित्रः | कार्त्तिकेयः |
| २२.कमला | सावित्री |
| २३. द्विजाः | लक्ष्मीः |
| २४. देवता | गौरी |
| २५. राक्षसः | अश्विनीकुमारः |
| २६. पितरः | पितरः |
| २७. विधिः | अदितिः |

**कश्यपसंहिता अध्यायः–१५**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः–१५**

व.सं.–योगानां नामानि कथितानि सन्ति। क.सं.–योगानां नामानि न प्राप्यन्ते। व.सं.–योगः स्वनामसदृशं फलं ददाति। क.सं.–एतद्वर्णनं न प्राप्यते। व.सं.–विरुद्धयोगस्य प्रथमं पादं त्याज्यम्। क.सं.–एतद्वर्णनं न प्राप्यते।

व.सं.–समस्तयोगानामतीव विस्तारेण विवेचनं प्राप्यते।क.सं.–समस्तयोगानामावश्यकमेव विवेचनं प्राप्यते। व.सं.–व्यतीपातयोगे दानफलं लक्षगुणं, भ्रमणे कोटिगुणं, उत्तिष्ठे सप्तकोटिगुणं, निपाते चाक्षयफलं वर्णितम्। क.सं.–एतद्वर्णनं न प्राप्यते।

व.सं.–व्यतीपातयोगस्य शरीराकृतिः कल्पिता। क.सं.– न प्राप्यते। व.सं.– सूर्यचन्द्रमसोर्योगान्नक्षत्रमुत्पन्नं भवति, अतो नक्षत्रस्वामिन एव योगानां स्वामिनो ज्ञेयाः। क.सं.–योगानां स्वामिनामानि वर्णितानि।

**५.करणम्**

**कश्यपसंहिता अध्यायः–१६**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः–१००**

बृ.सं.–क्रमतः सम्पूर्णकरणानां नामानि कथितानि। क.सं.–बवादीनि, विष्टिः, नागचतुष्पदौ इत्यादिकं कथितं किन्तु सम्पूर्णकरणानां नामानि न कथितानि। बृ.सं.– करणानां स्वामिविषये केवलमेको भेदो दृश्यते, चतुष्पादस्य स्वामी वृषो निर्दिष्टः। क.सं.–करणानां स्वामिविषये केवलमेको भेदो दृश्यते, चतुष्पादस्य स्वामी रक्षो निर्दिष्टम्। बृ.सं.–बवादि– एकादशकरणेषु कर्तव्यकर्माणि वर्णितानि। क.सं.– न प्राप्यते। बृ.सं.– कर्णवेधविषयको मुहूर्तविचारस्तथा च विवाहपटलविषयकं विवेचनं करणाध्याये कथं कृतमिति विचारणीयम्। क.सं.– करणाध्याय एतद्विवेचनं न प्राप्यते। कर्णवेधविचारो न कृतः। विवाहाध्याये विवाहमुहूर्तविवेचनं प्राप्यते। क.सं.– भद्रा(विष्टि)करणस्य शरीराङ्गकल्पना तस्य शरीराङ्गेषु नाडीनां स्थापनम्, तच्छुभाशुभफलवर्णनं प्राप्यते। बृ.सं.– एतद्वर्णनं न प्राप्यते।

**कश्यपसंहिता अध्यायः–१६**

**नारदसंहिता अध्यायः–९**

क.सं.–भद्रा(विष्टि)करणस्य शरीराङ्गकल्पना तस्य शरीराङ्गेषु कट्यामुन्मत्तता फलं कथितम्। क.सं.–भद्रा(विष्टि)करणस्य शरीराङ्गकल्पना तस्य शरीराङ्गेषु कट्यामुद्गमनं फलं कथितम्।

**कश्यपसंहिता अध्यायः-१६**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः-१६**

व.सं.-क्रमतः सम्पूर्णकरणानां नामानि लिखितानि। क.सं.-बवादीनि, विष्टिः, नागचतुष्पदौ इत्यादिकं कथितं किन्तु सम्पूर्णकरणानां नामानि न प्राप्यन्ते। व.सं.- बवादि- समस्तैकादशकरणेषु कर्तव्यकर्माणि वर्णितानि। क.सं.- न प्राप्यते। व.सं.- भद्राजन्मविषये पौराणिकी कथा निरूपिता। देवदानवसंग्रामे देवानां पराजयो भवति, तदा शिवक्रोधात् तृतीयशिवनेत्राद् विष्टिकरणोद्भवः। तया दैत्यानां वधः। अत एव करणानां मध्ये तस्यै स्थानं प्रदत्तम्। शिवक्रोधात्तृतीयनेत्राद्भद्रा जाता। अतो माङ्गलिककर्मणि तस्या विवर्जनम्। क.सं.- न प्राप्यते।

**संस्काराः**

**कश्यपसंहिता अध्यायाः-२३ तः ३५**

**बृहत्संहिता अध्यायाः-९८,१००,१०३,५०**

क.सं.-आधानकालस्य(गर्भाधानसमयस्य) मुहूर्तो विशदीकृतः। तत्र पुत्र-पुत्री-षण्ढस्य समुत्पन्नस्य कारणं, तथा पुत्र-कन्याप्राप्तिमुहूर्तो विवेचितः। बृ.सं.- न प्राप्यते। क.सं.-गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्त-जातकर्म-नामकर्म-चौल-उपनयन-अन्त्येष्टि-श्राद्ध-संस्काराणां मुहूर्तस्य विशदं वर्णनं प्राप्यते। बृ.सं.- केवलेन श्लोकेनैकेन समस्तसंस्काराणां साधारणमत्यन्तस्थूलमानेन मुहूर्तविवरणं प्राप्यते। बृ.सं.- कर्णवेध-विवाह-सामान्यक्षौरकर्मविषये विवेचनं संक्षिप्तं दृश्यते। क.सं.-कर्णवेधं विहाय विवाहादिसमस्तसंस्काराणां विभिन्नाध्यायेषु पर्याप्तं विवेचनं दृश्यते। क.सं.-छुरिकाबन्धनाध्याये छुरिकाधारणकालमुहूर्तविषये चिन्तनं विवर्णितम्। बृ.सं.-

खड्गाध्याये खड्गविषयकं चिन्तनं प्राप्यते किन्तु छुरिकाधारणकालमुहूर्तविषये चिन्तनं न विवर्णितम्।

**कश्यपसंहिता अध्यायाः–२३ तः ३५**

**नारदसंहिता अध्यायाः–१५ तः २९, ५५**

क.सं.–आधानकाले पर्वतिथिः, मूल–आश्लेषा–मघानक्षत्राणि वर्जितानि। ना.सं.–एतद् वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.–आधानमासाधिपाः शुक्र–मङ्गल–गुरु–सूर्य–चन्द्र–शनि–बुध–आधानलग्नेश–चन्द्र–अर्का विवर्णिताः सन्ति। ना.सं.–एतद् वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.–व्यक्तगर्भे पुंसवनं कुर्यात्। ना.सं.– प्रसिद्धगर्भे विषममासे तृतीये वा पुंसवनं कुर्यात्। क.सं.–नामकर्म जन्मतो सूतकान्ते द्वादशाहे सुमुहूर्ते वा स्वस्तिवाचनपूर्वकं कथितम्। ना.सं.–सूतकान्ते सुमुहूर्ते वा नामकरणं कार्यम्। क.सं.–सुश्रीयुतं तिङन्तं सुसमाक्षरैर्नामपूर्वकं नामकरणं शुभप्रदम्। ना.सं.–एतद्वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.–दिनस्य पूर्वाह्णे मङ्गलघोषपूर्वकं नामकरणं कार्यम्। ना.सं.–एतद्वर्णनं न प्राप्यते।

क.सं.– ६–८–१० मासे शिशोर्नवान्नप्राशनं कार्यम्। ना.सं.–६–८मासे पुत्रस्य तथा ५–७ मासे पुत्र्या नवान्नप्राशनं शुभम्। क.सं.–अन्नप्राशन आभ्युदायिकं (नान्दीश्राद्धं) कर्म कृत्वा स्वस्तिवाचनपूर्वकं शुक्लस्रग्वस्त्रगन्धाद्यैः शिशुर्दैवज्ञमर्चयेत्। अन्नप्राशनस्य विधिस्तथा सूर्यादिग्रहाणामन्नप्राशनलग्नस्थानां विशेषतः फलादेशो विवर्णितः। ना.सं.–एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते।

क.सं.–उपनयनसंस्कारस्य महत्त्वं प्रतिपाद्य प्रयोजनं वर्णितम्। तद्यथा–द्विजत्वकारणं श्रौतस्मार्तकर्मप्रसाधनम्। ना.सं.–एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.–उपनयनलग्ने यदा शाखेशो गुरुः शुक्रश्च नीचस्थस्तदंशगो वा तदोपनीतः स

शिशुर्वेदशास्त्रविवर्जितः। ना.सं.- उपनयनलग्ने यदा शाखेशो गुरुः शुक्रश्च नीचस्थस्तदंशगो वा तदोपनीतः स शिशुः कुलशीलविवर्जितः। क.सं.-उपनयनलग्ने शाखेशो वा गुरुशुक्रौ रिपुराश्यंशगौ तत्रोपनीतशिशुः कलाखिलविवर्जितः। ना.सं.- उपनयनलग्ने शाखेशो वा गुरुशुक्रौ रिपुराश्यंशगौ तत्रोपनीतशिशुः महाघातककृद्भवेत्।

**उपनयनलग्नात् केन्द्रगताः पापग्रहोद्भवा विशिष्टपापयोगाः-**

| **क्र. कश्यपसंहिता** | **नारदसंहिता** |
|---|---|
| १) स्फूर्जितः- कुलनाशकः | फूर्जितः-वंशनाशनः |
| २) कुपितः-शिष्याचार्यविनाशनः | कूजितः-शिष्याचार्यविनाशनः |
| ३) रुधिरः-महदापदः | रुदितः-अतुला गदा |
| ४) रन्ध्रः-शिशोर्मातृविनाशकः | रन्ध्रः-मातृविनाशकः |
| ५) उग्रः-विद्यावित्तविनाशनः | उग्रः-तातवित्तविनाशनः |

क.सं.-अनेकदोषनाशका विशिष्टा विविधयोगा विवर्णिताः।ना.सं.- एतद्वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- चैत्रमासं विवर्ज्य माघादिषु पञ्चसु मासेषु समावर्तनं विवर्णितम्। ना.सं.-अत्र मासानां कथनं न विद्यते। क.सं.- समावर्तनसंस्कारेऽष्टमीतिथेस्त्यागः कथितः। ना.सं.- समावर्तनसंस्कारे सप्तमीतिथेस्त्यागः कथितः। क.सं.- अत्राङ्कुरार्पणं विस्तारेण वर्णितम्। सर्वेषु मङ्गलेष्वेवमङ्कुरार्पणमिष्यते। ना.सं.-स्वतन्त्राध्यायेऽङ्कुरार्पणं वर्णितम्। तत् संक्षेपतश्चतुर्भिः श्लोकैस्त्रयोविंशतितमेऽध्याये वर्णनं कृतम्।

**छुरिकाया अङ्गुलादिमानेनैकादशभागफलम्-**

| **क्र. कश्यपसंहितोक्तं** | **नारदसंहितोक्तं** |
|---|---|
| १) मृत्युः | पुत्रलाभः |

| | |
|---|---|
| २)आपत्तिः | शत्रुवृद्धिः |
| ३)पुत्रहानिः | स्त्रीलाभः |
| ४)स्त्रीलाभः | गमनम् |
| ५)गमनम् | शुभम् |
| ६)यशः | द्रव्यहानिः |
| ७)अर्थहानिः | द्रव्यवृद्धिः |
| ८)धनम् | प्रीतिः |
| ९)शत्रुक्षयः | सिद्धिः |
| १०)सन्धिः | विजयः |
| ११)कीर्तिः | स्तुतिः |

क.सं.-छुरिकाया अग्रभागे यदा व्रणो दृश्यते तदा तत्फलम्- १)अग्रभागे व्रणः-जयप्रदः २)मध्यभागे व्रणः-हानिदः ३)अन्त्यभागे व्रणः- निधनप्रदः। ना.सं.-एतादृशं वर्णनं न वर्तते। क.सं.-विवाहसंस्कार ऋणत्रयच्छेदकारी धर्मकामार्थसिद्धिदः -इति वर्णनं कृतम्। ना.सं.-विवाहसंस्कारस्य महत्त्वं वर्णितं किन्तु ऋणत्रयच्छेदकारी धर्मकामार्थसिद्धिदः -इति वर्णनं न कृतम्। क.सं.-कन्यालाभप्रश्ने- वृषभ-कुम्भ-कर्कलग्ने शुक्र-चन्द्रौ संबन्धयुक्तौ(युतिः-दृष्टिः), तदा कन्यालाभो भवति। ना.सं.-कन्यालाभप्रश्ने- वृषभ-तुला-कर्कलग्ने शुक्र-चन्द्रौ संबन्धयुक्तौ(युतिः-दृष्टिः), तदा कन्यालाभो भवति। क.सं.-कन्याप्रदानेन- सम्यक् कन्याप्रदानात् पुत्रप्रौत्रप्रवर्धनम्(वंशाभिवृद्धिः) -इति कन्याप्रदानफलं लिखितम्। ना.सं.-एतादृशं वर्णनं न लिखितम्।

क.सं.-कन्यावरणमुहूर्ते- कन्यावरणं कुजवर्जितवासरे, मासाद्यदिवसं (प्रतिपद्)- रिक्तां(४-९-१४ तिथिः), अष्टमीं नवमीं च तिथिं त्यक्त्वा, पञ्चाङ्गशुद्धिदिवसे कुर्यात्। ना.सं.-एतादृशं मुहूर्तवर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-कन्यावरणे -सह वृद्धगणैर्वरयेत्कन्यकां सतीम्। वरणोक्तवासरे कन्यापिता तस्याः कन्यायाः स्वस्तिवाचनपूर्वकं विधिं कारयेत्। ना.सं.-कन्याप्रदानं तस्याः पिता प्रीतिपूर्वकं कुर्यात्। अन्यविवरणं न प्राप्यते। क.सं.-कन्यावरणाध्याय इन्द्राणीप्रार्थनामन्त्रे- देवेन्द्रप्रियभामिनि –इति पाठः। ना.सं.-कन्यावरणाध्याय इन्द्राणीप्रार्थनामन्त्रे- देवेन्द्रप्रियभाषिणि –इति पाठः।

क.सं.-सूर्यराशिचार(सौरमास)वशात् विवाहमुहूर्तः प्रदत्तः। ना.सं.- चान्द्रमासवशात् विवाहमुहूर्तः प्रदत्तः। क.सं.-उत्तरायणगे सूर्ये मीनराशिचारे चैत्रमासे विवाहं परिवर्जयेत्। ना.सं.-एतादृशं मुहूर्तविवेचनं न प्राप्यते। क.सं.- विवाहोक्तमासनामानि वैदिकनामैर्वर्णितानि वर्तते। तथा-शुक्ले, तपस्ये, तपसि, माधवे करग्रहः प्रशस्तः, सहोर्जमासयोर्मध्यमः ज्ञेयः। ना.सं.-एतादृशाणि वैदिकमासनामानि न प्राप्यन्ते। किन्तु सामान्यानि मासनामानि कथितानि सन्ति। क.सं.- चापराशि(धनुराशि)गते सूर्ये विवाहं नैव कारयेत्। ना.सं.-एतादृशं मुहूर्तविधानं न प्राप्यते। क.सं.-वृद्धश्चन्द्रः स्त्रियं हन्ति, अस्तंगतश्चन्द्रस्तत्पतिं हन्ति। ना.सं.-एतादृशं विधानं न प्राप्यते।

क.सं.-विवाहोक्तविविधानां एकोनविंशतिदोषाणां निरूपणं स्वतन्त्रध्याये प्राप्यते। ना.सं.-विवाहोक्तविविधानामेकोनविंशतिदोषाणां निरूपणं न स्वतन्त्राध्याये, किन्तु विवाहाध्याय एव प्राप्यते। क.सं.-ज्येष्ठे मासे कन्यावरस्यैकस्य ज्येष्ठत्वे विवाहः शुभदः(त्रिज्येष्ठे दोषः, न द्विज्येष्ठे)। ना.सं.-एतादृशं विधानं न प्राप्यते।

क.सं.-एकोनविंशतिदोषनिरूपणेऽत्यन्तमहत्त्वपूर्णविविधसुभाषितानां प्रयोगः प्राप्यते। ना.सं.- एकोनविंशतिदोषनिरूपणे सुभाषितानां प्रयोगो न प्राप्यते। क.सं.-सौराष्ट्रे साह्वदेशे च लोहिताभं, वङ्गदेशे चण्डीशचण्डायुधं विवर्जयेत्। ना.सं.- सौराष्ट्रे शाल्वदेशे च लत्तितं, कलिङ्गे वङ्गदेशे च पातितं भमुपग्रहं च वर्जयेत्। क.सं.-वाह्लिके कुरुदेशे चोपग्रहदोषं विवर्जयेत्। ना.सं.-वाह्लिके कुरुदेशे च यस्मिन्देशे न दूषणम् - इति कथितम्।

क.सं.-कलिङ्गदेशे दग्धलग्नानि वर्ज्यानि। ना.सं.- कलिङ्गे वङ्गदेशे च पातितं भमुपग्रहं वर्ज्यम्। क.सं.-विवाहकुण्डलीगतसूर्यादिग्रहाणां द्वादशस्थानवशात् शुभाशुभफलानि विवर्णितानि। ना.सं.-एतादृशं विवाहकुण्डलीगतसूर्यादिग्रहाणां द्वादशस्थानवशात् शुभाशुभफलं न प्राप्यते। क.सं.-आर्याणां मागधानां च गोधूलिकं मुख्यं मतम्। ना.सं.- प्राच्यानां च कलिङ्गानां गोधूलिकं मुख्यं मतम्। क.सं.-ब्राह्म-प्राजापत्य-दैव-आर्षेत्यादीनां विवाहानां लक्षणं विवर्णितम्। ना.सं.-एतादृशं लक्षणं न प्राप्यते।

क.सं.-नववधूप्रवेशो विवाहात् ६-८-९-१०दिने शुभप्रदः। ना.सं.-नववधूप्रवेशो विवाहात् समदिने तथा दशमे दिने कर्तव्यः। क.सं.-अन्येष्टिक्रियायां शवदाहे शुक्र-रविवारौ वर्जनीयौ। ना.सं.- अन्येष्टिक्रियायां शवदाहे शुक्र-मङ्गलवारौ वर्जनीयौ। क.सं.-द्वितीयातिथावश्विनीनक्षत्रं स्यात्तदा श्राद्धे श्रीवत्सो नाम योगो भवति। स इहलोके सम्पत्प्रदः, कर्ता पुत्रप्रौत्रसमन्वितो भवेत्। ना.सं.-एतादृशं योग-फलं न प्राप्यते। क.सं.-तृतीयातिथौ भरणीनक्षत्रे श्राद्धे नन्दावर्ताह्वयो योगो भवति। तत्र पितृभ्यो दत्तमक्षय्यं भवति। ना.सं.- योगनाम एवं फलं न प्राप्यते। क.सं.-चतुर्थी भोगदा तत्र याम्यधिष्ण्यं भवेद्यदि। ना.सं.- चतुर्थी श्रीपदा पितृकर्मणि। क.सं.-पञ्चमी-भरणीनक्षत्रे

स्वस्तिकयोगो भवति। सः पुत्रदायकः। ना.सं.- पञ्चमी-भरणीनक्षत्र आनन्दयोगो भवति। सः पुत्रपौत्रधनदायकः। क.सं.-त्रयोदशीश्राद्धं पुत्रकलत्रयोः सर्वदा धनदं भवति। ना.सं.-त्रयोदश्यां हानिर्धनकलत्रयोर्भवति।

**कश्यपसंहिता अध्यायाः-२३ तः ३५**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायाः-२४ तः३२**

**गर्भाधानविषये प्रथमार्तवे वारफलम्-**

| क्र. वारः | कश्यपसंहिता | वसिष्ठसंहिता |
|---|---|---|
| १) भौमः | दु:खिता | वन्ध्या |
| २) बुधः | सौभाग्ययुता | संततियुता |
| ३) गुरुः | श्रीयुता | अधिकधनयुता |
| ४) शुक्रः | पतिभक्ता | आनन्ददायिनी |
| ५) शनिः | मलिना | कुलटा |

क.सं.-आधाने दशमरात्रिवर्जनं न प्राप्यते। व.सं.- आधाने दशमरात्रिवर्जनं कथितम्। क.सं.-पुंसवन-सीमन्तविषयेऽस्तागा नीचगाः शत्रुक्षेत्रस्था ग्रहा न फलप्रदाः, उदिता उच्चराशिगता मित्रराशिगता ग्रहाः सुफलप्रदाः भवन्ति। व.सं.- एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते।

व.सं.-गर्भरक्षार्थं पौराणिकदृष्ट्या रोहिणीनक्षत्रे श्रवणनक्षत्रे वा शुक्लपक्षस्य द्वादशीतिथौ सप्तमीतिथौ वा दिनस्य मध्याह्ने पूर्वाह्णे वा विष्णुपूजनं सविस्तारं सविधि वर्णितम्। क.सं.- एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते।

क.सं.-नामकरणसंस्कारे- नामकर्म द्वादशाहे वा सूतकान्ते स्वस्तिवाचनपूर्वकं कार्यम्। व.सं.-एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-नामकरणसंस्कारे- नामकमं सुश्रीयुतं

तिङन्तं सुसमाक्षरै:करणीयम्। व.सं.- एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- नामकरणसंस्कारो दिनस्य पूर्वाह्णे कार्य:। व.सं.- एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- नामकरणसंस्कारे- नाम मङ्गलघोषैश्च सरहस्यं शिशोर्दक्षिणश्रुतौ कथयेत्। व.सं.- एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-अन्नप्राशने शनैश्चर-भौम-सूर्यवारांस्त्यक्त्वान्यवासरे दिवसे कार्यम्। व.सं.-एतादृशं विवेचनं न प्राप्यते। क.सं.-अन्नप्राशन आभ्युदयिकं (नान्दीश्राद्धं) कर्म कृत्वा स्वस्तिवाचनपूर्वकं शुक्लस्रगवस्त्रगन्धाद्यै: शिशुर्दैवज्ञमर्चयेत्। व.सं.-एतादृशं विवेचनं न प्राप्यते।

क.सं.-अन्नप्राशने बालकं प्राङ्मुखं कृत्वा विधानत: प्राशयेत्। व.सं.-एतादृशं विवेचनं न च प्राप्यते। क.सं.-अन्नप्राशने बालकं सुवर्णद्रव्या रौप्यद्रव्या वा प्राशयेत्। व.सं.-एतादृशं विवेचनं न प्राप्यते। क.सं.-अन्नप्राशनलग्नस्थो यदा राहु: केतुर्वा भवेत्तदा सदालसं कदशनं बालकं करोति। व.सं.-अन्नप्राशनविलग्नगो यदा राहु: केतुर्वा भवेत्तदा शिशुमन्नविवर्जितं करोति। क.सं.-यदान्नप्राशनलग्नस्थो भौमो भवेत्तदा प्राशनकर्ता शिशू रिपुणा हन्यते। व.सं.-अन्नप्राशनविलग्नगो यदा भौमो भवेत्तदा प्राशनकर्ता शिशु: पित्तरोगेण पीडितो भवति। क.सं.-यदान्नप्राशनलग्नस्थौ द्वौ शुभौ ग्रहौ स्यातां तदा भोक्ता शिशु: सत्रदो भवेत्। व.सं.-एतादृशं विवेचनं न प्राप्यते। क.सं.- गर्भिणीपतिधर्मा न विवर्णिता:। व.सं.-गर्भिणीपतिधर्मा विवर्णिता:।

क.सं.-सर्वेषां जनानां सामान्यक्षौरकर्ममुहूर्तो विवर्णित:। व.सं.- सर्वेषां जनानां सामान्यक्षौरकर्ममुहूर्तो न विवर्णित:। क.सं.- पञ्चमे-पञ्चमे दिने सामान्यक्षौरं शुभदम्। व.सं.-एतादृशं विवरणं न लिखितम्। क.सं.-आत्महितैषिणां क्षौरनिषेध:- स्नात्वा-भुक्त्वा-युद्धे-याने-भूषिते-निशायां-सन्ध्यायां-नवमे नवमे दिने न क्षौरं कार्यम्। व.सं.-एतादृशं विवरणं न लिखितम्। क.सं.-विप्रभूपाज्ञयोद्वाहे सूतके-

बन्धमोक्षणे-यज्ञाधाने समस्तनक्षत्रवारेषु क्षौरकर्म इष्टसिद्धिदम्। व.सं.-एतादृशं विवरणं न लिखितम्।

क.सं.-उपनयनसंस्कारमहत्त्वं- अनेन संस्कारेणैव द्विजत्वं प्राप्नोति। अनेन संस्कारेणैव श्रौतस्मार्तकर्म साध्यते। सर्वाश्रमाणामाद्यसंस्कार:। अयं देहसंस्कार:। अनेन संस्कारेणैव पूर्वदेहिन: संस्कृता भवन्ति। व.सं.-श्रुतिस्मृतीनां पदमुत्तमं द्विजस्तस्योत्तमत्वं व्रतबन्ध:। क.सं.-उपनयनसंस्कारलग्ने यदा भौम: स्यात्तदा शिष्याचार्यविनाशो भवेत्। व.सं.- उपनयनसंस्कारलग्ने यदा भौम: स्यात्तदा स वर्षमध्ये कुमारं हन्ति।

क.सं.-उपनयनसंस्कारलग्ने यदा राहु: स्यात्तदा शिशोर्मातृनाशो भवेत्। व.सं.- उपनयनसंस्कारलग्ने यदा राहु: स्यात्तदा शिशोर्मातृनाशोऽर्थविनाशो वा जायते। क.सं.- उपनयनसंस्कारलग्नकुण्डल्यां विविधभाव-ग्रहोद्भवानामावश्यकशुभाशुभयोगानां शुभाशुभफलं विवर्णितम्। व.सं.- उपनयनसंस्कारलग्नकुण्डल्यां द्वादशभाव-ग्रहोद्भवानां फलं विस्तारेण वर्णितम्। क.सं.-चैत्रमासं विवर्ज्य माघादिषु पञ्चमासेषु समावर्तनसंस्कारमुहूर्तो विवर्णित:। व.सं.- समावर्तनसंस्कारमुहूर्तविषये मासानां कथनं न प्राप्यते। क.सं.- समावर्तनसंस्कारोक्तवार: १)बुध:२)गुरु:३)शुक्र: विवर्णित:। व.सं.- समावर्तनसंस्कारोक्तवार: १) गुरु: २) शुक्र: विवर्णित:।

क.सं.-समावर्तनसंस्कारेऽपि सर्वेषु मङ्गलेष्वेवमङ्कुरार्पणमिष्यते। इति कथयित्वाङ्कुरार्पणं सविधि विवर्णितम्। व.सं.- समावर्तनसंस्कारेऽङ्कुरार्पणविधिर्न वर्णित:। क.सं.-आवश्यकं सम्पूर्णं वर्णनमस्मिन्नध्याये प्राप्यते। व.सं.-अस्मिन्नध्याये केवलं श्लोकत्रयं प्राप्यते। तेन स्वल्पं वर्णनं प्राप्यते। क.सं.-विवाहप्रश्नविषये वरस्य कन्यायाश्च जन्मनक्षत्रं राशिं च दैवज्ञाय निवेदयेत्। व.सं.-एतादृशं विवरणं न

लिखितम्। क.सं.- कन्या-वर प्राप्तिप्रश्ने निमित्त-शकुनादिभिर्लाभालाभविचार: कृत:। व.सं.-एतादृशं विवरणं न लिखितम्।

क.सं.-कन्यावरणं विवाहस्याङ्गं वर्तते तेनात्र पूर्णतया कन्यावरणस्य स्वतन्त्राध्याये (कन्याप्रदानाध्याये) वर्णनं कृतम्। व.सं.-एतद्विषये विवरणं न लिखितम्। क.सं.-कन्याप्रदानाध्याये -गन्ध-वस्त्र-ताम्बूलादिभि: कन्यां पूजयित्वा शुक्लवस्त्रविभूषणं दत्त्वा मङ्गलघोषैर्विप्राशीर्वचनै: सह शची (देवेन्द्राणी) पूजनादौ कन्यावरणविधि: प्रदर्शित:। व.सं.-एतादृशं किमपि वर्णनं न प्राप्यते।

क.सं.-विवाहविषये स्त्रीणां युग्माब्दे, पुरुषाणामयुग्माब्दे विवाह: पुत्रपौत्रद:। तस्य विपरीते तु मृत्युदो भवेत्। व.सं.-विवाहविषये स्त्रीणां युग्माब्दे, पुरुषाणामयुग्माब्दे विवाह: शुभद: कथित:। तस्य विपर्यये तु दु:खगदप्रद:। क.सं.-वृद्धशुक्र: स्त्रियं हन्ति वृद्धजीवस्तु तत्पतिं हन्ति -इति कथितम्। व.सं.-एतादृशं किमपि वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-ज्येष्ठमासे कन्या वा वरैकस्य जेष्ठत्वं शुभदं स्मृतम्। (अत्र त्रिज्येष्ठत्वं विवर्जनीयं न द्विज्येष्ठत्वं) व.सं.-एतादृशं किमपि वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-तिथिरेकगुण:, वारो द्विगुणो, तत: तारक:(नक्षत्रम्), तस्मात्तु बलवान्योग:, करणं बलवांस्ततो लग्नं बलाधिकम्, होरा बलवती लग्नाद्, देक्काणो बलवांस्तत:, ततो नवांशो बलवान्, द्वादशांशस्ततो बली, सर्वेभ्यो बलवान् त्रिंशांश:। व.सं.-अध्यायेऽस्मिन् एतत् तिथ्यादिबलाबलत्वं न चिन्तितम्।

क.सं.-ग्रन्थकार: केवलं स्वमतमेव प्रस्थापितं करोति। व.सं.- ग्रन्थकार: पितामहादीनां मतानां स्वसंहितायां समुल्लेखं करोति।

क.सं.-विवाहे संग्रहदोष(चन्द्रयुतग्रहोद्भवदोष)विषये फलम्-राहुग्रहोद्भव: संग्रहदोष: कलहप्रद:, केतूद्भव: संग्रहदोषोऽतुलं दु:खप्रदो भवेत्। व.सं.- राहुग्रहोद्भव:

संग्रहदोषो न वर्णितः। क.सं.-विवाहे संग्रहदोषे(चन्द्रयुतग्रहोद्भवदोषे)पापद्वयेन युतश्चन्द्रो दम्पत्योर्निधनप्रदः। व.सं.- एतस्य योगस्य वर्णनं न प्राप्यते। व.सं.-वेध-गण्ड-लिङ्ग-जाति-पक्षि-आय-गोत्र-योगिन्यादिविविधान्यष्टादश कूटानि लिखितानि। क.सं.- अत्रावश्यकाष्टकूटानां वर्णनं प्राप्यते, किन्तु अन्यकूटानां वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- नववधूप्रवेशः ६-८-९-१० दिने शुभप्रदः। व.सं.- नववधूप्रवेशः ६-८-१० दिने शुभप्रदः। क.सं.-अन्त्येष्टिसंस्कारस्य, श्राद्धविषयकस्य स्वतन्त्राध्याये विशिष्टं सफलं योगादिसहितं विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते। व.सं.- अन्त्येष्टिसंस्कारस्य श्राद्धविषयकं विवेचनं न प्राप्यते।

**वास्तु -**

**कश्यपसंहिता अध्यायाः-३७ तः ३९**

**बृहत्संहिता अध्यायः-५३**

बृ.सं.-वास्तुपुरुषस्य पौराणिकरीत्योत्पत्तिवर्णनं विवर्णितम्। क.सं.-वास्तुपुरुषस्य पौराणिकरीत्योत्पत्तिवर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-गृहप्रवेशविषयके स्वतन्त्राध्याये गृहप्रवेशमुहूर्तस्य विस्तृतं विवरणं प्राप्यते। तस्य मुहूर्तः-पञ्चाङ्गशुद्धिसंयुक्ते, गृहे दिवा-रात्रिप्रवेशः, तत्फलं, गृहप्रवेशकुण्डलिगतग्रह-योगानयसारतः शुभाशुभफलं, वामार्कादिविवर्णनपूर्वकं भृङ्गारादिसहितं गृहप्रवेशो विशदीकृतः। अकपाटमनाच्छन्ने वास्तुबलिपूजनहीने गृहप्रवेशे विपत्तिरशुभफलं विवर्णितम्। बृ.सं.-केवलैकेन श्लोकेन गृहप्रवेशवर्णनं कृतम्। तत्र वेदमन्त्रध्वनिपूर्वकं भृङ्गारसहितं गृहप्रवेशो लिखितः। ग्रन्थकारो गृहप्रवेशमुहूर्तादिविषये वर्णनं न करोति।

क.सं.-भूमेर्विप्रादिवर्णानां क्रमतो गन्धः- १)विप्रः-मधु २)क्षत्रियः-पुष्पम् ३)वैश्यः-सुरा ४)शूद्रः-मांसम्। बृ.सं.-भूमेर्विप्रादिवर्णानां क्रमतो गन्धः- १)विप्रः-घृतगन्धा २)क्षत्रियः-रक्तगन्धा ३)वैश्यः-अन्नगन्धा ४)शूद्रः-मद्यगन्धा

क.सं.-क्षेत्रस्वीकरणार्थं तस्मिन् भूमौ दिग्ज्ञानार्थं द्वादशाङ्गुलशङ्कुस्थापनं, तेन पूर्वापराह्णयोश्छायया पूर्व-पश्चिमदिक्शोधनं, ततश्चाप-त्रिकोणमितिगणितेनोत्तर-दक्षिणदिग्ज्ञानं विशदीकृतम्। बृ.सं.-दिग्ज्ञानार्थं कापि पद्धतिरध्यायेऽस्मिन्न दत्तास्ति।

**प्राच्यदिशायां गृहद्वारफलानि-**

| **क्र. कश्यपसंहिता** | **बृहत्संहिता** |
|---|---|
| १)क्रोधः | अग्निभयम् |
| २)भीतिः | कन्याजन्म |
| ३)धनप्राप्तिः | बहुधनम् |
| ४)नृपपूजा | नरेन्द्रप्रीतिः |
| ५)महद्भयम् | क्रोधपरता |
| ६)चौरभयम् | असत्यभाषणम् |
| ७)विपुत्रता | क्रूरता |
| ८)हानिः | तस्करता |

**दक्षिणदिशायां गृहद्वारफलानि-**

| **क्र. कश्यपसंहिता** | **बृहत्संहिता** |
|---|---|
| १)बन्धनम् | अल्पपुत्रता |
| २)निधनम् | दासत्वम् |
| ३)प्रीतिः | नीचत्वम् |

| | |
|---|---|
| ४)अर्थप्राप्तिः | भक्ष्यपानवस्तुपुत्रवृद्धिः |
| ५)धनागमत्वम् | रौद्रम् |
| ६)अरुजत्वम् | कृतघ्नता |
| ७)व्याधिभयम् | निर्धनता |
| ८)अधनत्वम् | पुत्रबलहानिः |

**पश्चिमदिशायां गृहद्वारफलानि-**

| **क्र. कश्यपसंहिता** | **बृहत्संहिता** |
|---|---|
| १)पुत्रहानिः | पुत्रपीडा |
| २)शत्रुवृद्धिः | शत्रुवृद्धिः |
| ३)लक्ष्मीप्राप्तिः | धनलाभः |
| ४)अर्थप्राप्तिः | सुतसम्पत्तिप्राप्तिः |
| ५)धान्यप्राप्तिः | सम्पत्तिः |
| ६)सौभाग्यम् | राजभयम् |
| ७)दुःखम् | धननाशः |
| ८)शोकः | रोगः |

**उत्तरदिशायां गृहद्वारफलानि-**

| **क्र. कश्यपसंहिता** | **बृहत्संहिता** |
|---|---|
| १)हानिः | मृत्युर्बन्धनम् |
| २)स्त्रीदूषणम् | शत्रुवृद्धिः |
| ३)निःस्वम् | पुत्रधनलाभः |
| ४)बहुधान्यम् | समस्तगुणसम्पत् |

५)धनागमः पुत्रधनाप्तिः

६)सम्पद्वृद्धिः वैरम्

७)महाभीतिः सुतदोषः

८)व्याधिः नैःस्वम्

क.सं.–द्वारस्यायाम–दैर्घ्यविषये– विस्ताराद्विगुणोत्सेधं द्वारमेवं गृहादिषु। बृ.सं.–राजा–सेनापति–विप्रादिवर्णानां भिन्न–भिन्नप्रमाणानि प्रदत्तानि। क.सं.– यदा पितृद्वयान्त्यमूलार्कानि, भौमेन सहितानि तदा गृहारम्भस्तद्गृहमग्निना दह्यते। बृ.सं.–एतादृशं विवरणं न प्राप्यते। क.सं.–चन्द्रेऽर्के वाग्निनक्षत्रे संस्थे गृहनिर्माणे सति तद्गृहमग्निना दह्यते। बृ.सं.–एतादृशं विवरणं न प्राप्यते। क.सं.–शनिसंयुक्तेषु, मैत्रेन्द्रनिलयाम्यनक्षत्रेषु गृहनिर्माणे सति तद्गृहं यक्षराक्षसैर्गृह्यते। बृ.सं.–एतादृशं विवरणं न प्राप्यते।

क.सं.–अध्यायेऽस्मिन् विस्तारेण विविधयोगाः –अन्यहस्तगतगृहं, निःस्वगृहं, श्रीयुतगृहं, सुखप्रदगृहम्, इष्टार्थसिद्धिप्रदगृहं, धनधान्यसुखप्रदगृहं, भूरिधान्यप्रदगृहं, भूरिलाभप्रदगृहं, पुत्रपौत्रप्रवर्धनगृहम्, इत्यादीनि विविधशुभाशुभफलयुतानि गृहाणि वर्णितानि। बृ.सं.–एतादृशं विवरणं न प्राप्यते। क.सं.–गृहारम्भः स्थिरराशिगते रवौ वा चरराशिगते कार्यः, किन्तु द्विस्वभावराशिगते रवौ न कारयेत्। बृ.सं.–एतादृशं विवरणं न प्राप्यते। क.सं.–गृहारम्भे मासाः–माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ–श्रावण–कार्त्तिक–मार्गशीर्षमासाः शुभप्रदाः। बृ.सं.– गृहारम्भे मासानां विवरणं न प्राप्यते। क.सं.–गृहास्याय–व्ययप्रमाणेन गृहनिर्माणं तत्फलं च प्रथितम्। बृ.सं.– एतादृशं गृहास्याय–व्ययविषयकं विवरणं न प्राप्यते।

क.सं.- गृहारम्भे सूर्य-भौमवारांशा भयप्रदाः। शेषग्रहाणां वारांशाः कर्तुरिष्टार्थसिद्धिप्रदाः। बृ.सं.- एतादृशं गृहारम्भे सूर्य-भौमवारांशविषयकं विवरणं न प्राप्यते। क.सं.- चरवास्तूल्लेखो गृहद्वारस्थापनविषये कृतः। बृ.सं.- एतादृशं चरवास्तुविषयकं विवरणं न प्राप्यते।

क.सं.- गृहराशिगृहस्वामिराशिसम्बन्धवशात् षडाष्टक-नवमपञ्चम-द्विर्द्वादशमित्यादिकं विविधसम्बधप्रकारेणैव शुभाशुभफलं विवर्णितम्। बृ.सं.-एतादृशं गृहराशि-गृहस्वामिराशिसम्बन्धवशात् शुभाशुभं फलविवरणं न प्राप्यते।

**क.सं.-षोडशविधगृहस्य नामानि विवर्णितानि-**

(१) ध्रुवं, ( २)धन्यं, (३)जयं, (४)नन्दं, (५)खरं, (६)कान्तं, (७)मनोरमं, (८)सुमुखं, (९)दुर्मुखं (१०)क्रूरं, (११)शत्रुं, (१२) स्वर्णप्रदं, (१३)क्षयम्, (१४)आक्रन्दं, (१५)विपुलाख्यं, (१६)विजयम्। -एते गृहाः पुण्यवंशास्तेषां वर्णनं कृतम्। बृ.सं.- एतादृशां पुण्यप्रदानां षोडशविधगृहाणां नामविषयकं विवरणं न प्राप्यते।

क.सं.- सर्वतोभद्रादिप्रसिद्धवास्तुसहितस्य त्रैलोक्यविश्रुतस्य जयनाम्नो गृहस्य वर्णनं प्राप्यते। बृ.सं.- एतादृशो जयनाम्नो गृहस्य विवरणं न प्राप्यते।

क.सं.- गृहाभ्यन्तरे विविधव्यवस्थाः- (१)इन्द्राग्न्योः- वर्धनं गेहम्, (२)यमाग्न्योः- घृतमन्दिरम्। (३) राक्षसकालयोर्मध्ये- पुरीषत्यागसदनम्, (४)जलाधीशनिर्ऋत्योर्मध्ये- विद्यागृहम्, (५)जलाधीशसमीरयोः- रोदनं सदनम्, (६)वायुकुबेरयोर्मध्ये- कामोपभोगसदनम्, (७)कुबेरेश्वरयोर्मध्ये- नवरत्नालयम्। (८)ईशेन्द्रयोर्मध्ये-धान्यगृहम्। बृ.सं.- एतादृशं गृहाभ्यन्तरे विविधव्यवस्थाविवरणं न प्राप्यते।

क.सं.- जलस्रावे विविधानि मानानि- १)पाञ्चालं, २)विदेहं, ३)आवन्तिकं, ४)मागधं ५)कौरवं, ६)शूरसेनं, ७)विजयं, ८)गान्धरम् –इत्यष्टौ मानानि कथितानि सन्ति। बृ.सं.- एतादृशानि जलस्रावे विविधानि मानानि नामानि च न प्राप्यन्ते।

क.सं.–वास्तोः शिलान्यासे ब्रह्मस्थानं निधनप्रदम्, मण्डलपरितः पिशाचांशाः दुःखशोकभयप्रदाः। शेषांशाः पुत्रपौत्रप्रदाः। बृ.सं.- पूर्वोत्तरकोणे पूजापूर्वकं वास्तोः शिलान्यासं कुर्यात्। क.सं.- गृहसमीपे बदिरं खदिरं विना सर्वे कण्टका निन्दिताः सन्ति। बृ.सं.- गृहसमीपे सर्वे कण्टका निन्दिताः, शत्रुभयप्रदाः सन्ति। क.सं.- गृहाङ्गणे गृहसमीपे च विविधशुभाशुभवृक्षाणां विस्तारेण विवरणं प्राप्यते। बृ.सं.- गृहाङ्गणे गृहसमीपे च विविधशुभाशुभवृक्षाणां संक्षेपतो विवरणं प्राप्यते।

क.सं.–गृहारम्भकालीनकुण्डल्यनुसारेण गृहस्य विविधशुभाशुभफलानि कथितानि सन्ति। बृ.सं.–एतादृशं गृहारम्भकालीनकुण्डल्यनुसारेण शुभाशुभफलानि न प्राप्यन्ते। क.सं.–विप्रादीनां नृपादीनाञ्च गृहं ध्वजादि –आयानुसारतः कार्यम्। बृ.सं.– सविस्तरं विविधहस्तप्रमाणतो विप्रादीनां नृपादीनाञ्च गृहं कार्यम्। क.सं.– वर्णसङ्करप्रजानां किमपि गृहप्रमाणं प्रकारश्च न प्राप्यते। बृ.सं.– पराशवादिचतुर्विधवर्णसङ्करप्रजानां गृहप्रमाणं वर्णितम्। क.सं.- वास्तुमण्डले वास्तुदेवतास्थापने गणाधीशनाम प्राप्यते, किन्तु दितेर्नाम न प्राप्यते।

बृ.सं.–वास्तुमण्डले वास्तुदेवता स्थापने दितेर्नाम प्राप्यते, किन्तु गणाधीशस्य नाम न प्राप्यते। क.सं.–वास्तुपूजनाध्याये वास्तुदेवतास्थापनपूर्वकं सविस्तारेण मण्डलदेवतासहितं वास्तुपूजनं सविधि विवर्णितम्। अत्र वास्तुपूजनफलं– सम्यग्वास्तुपूजां प्रयत्नपूर्वकं यः कुरुते स नर आरोग्यायुःपुत्रपौत्रधनादीनि लभेत्।

वास्तुपूजाहीने फलम्–वास्तुपूजारहितं यः प्रविशेन्नवमन्दिरं रोगान्नानाविधान्क्लेशान्नश्नुते सर्वसङ्कटान्। बृ.सं.–एतादृशं वास्तुपूजादिकं विवरणं न प्राप्यते।

**कश्यपसंहिता अध्यायाः–३७ तः ३९**

**नारदसंहिता अध्यायः–३१–३२**

क.सं.–गृहप्रवेशमुहूर्तविषयकं सविस्तारं विशदं वर्णनं स्वतन्त्राध्याये कृतम्। ना.सं.–गृहप्रवेशमुहूर्तविषयकं वर्णनं प्राप्यते।

**वास्तुभूमेर्गन्धः–**

| **क्र.** | **विप्रादिवर्णः** | **कश्यपसंहिता** | **नारदसंहिता** |
|---|---|---|---|
| १) | विप्रः | मधु | मधु |
| २) | क्षत्रियः | पुष्पम् | पुष्पम् |
| ३) | वैश्यः | सुरा | आम्लम् |
| ४) | शूद्रः | मांसम् | मांसम् |

**वास्तुभूमेर्वर्णः–**

| **क्र.** | **विप्रादिवर्णः** | **कश्यपसंहिता** | **नारदसंहिता** |
|---|---|---|---|
| १) | विप्रः | सितः | सितः |
| २) | क्षत्रियः | रक्तः | रक्तः |
| ३) | वैश्यः | हरिद्रः(पीतः) | हरितः |
| ४) | शूद्रः | कृष्णः | कृष्णः |

**विप्रादीनां वर्णक्रमेण भूमिरसः(स्वादः)–**

| **क्र.** | **विप्रादिवर्णः** | **कश्यपसंहिता** | **नारदसंहिता** |
|---|---|---|---|
| १) | विप्रः | मधुरः | मधुरः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २) | क्षत्रियः | कटुः | कटुः |
| ३) | वैश्यः | कषायः | तिक्तः |
| ४) | शूद्रः | तिक्तः | कषायः |

**जलस्त्रावे अष्टविधदेशप्रमाणम्-**

| **क्र.** | **कश्यपसंहिता** | **नारदसंहिता** |
|---|---|---|
| १) | पाञ्चालमानम् | पाञ्चालमानम् |
| २) | वैदेहमानम् | वैदेहमानम् |
| ३) | कौरवमानम् | कौरवमानम् |
| ४) | विजयमानम् | कन्यकामानम्( कान्यकुब्जमानम्) |
| ५) | मागधमानम् | मागधमानम् |
| ६) | शूरसेनमानम् | शूरसेनमानम् |
| ७) | गान्धरमानम् | वङ्गमानम् |
| ८) | आवन्तिकम् | आवन्तिकम् |

क.सं.- वास्तुपूजनप्रकरणे वास्तुपूजा न करणेऽशुभफलं चोक्तम्- रोगान्नानाविधान्क्लेशानश्नुते सर्वसङ्कटान्। ना.सं.- एतादृशं वास्तुपूजनाध्याये वास्तुपूजा न करणे किमपि फलवर्णनं न प्राप्यते।

**द्वारस्यायामष्टभागानुसारतः फलम्-**

**(१)पूर्वद्वारम्-**

| **क्र.** | **कश्यपसंहिता** | **नारदसंहिता** |
|---|---|---|
| १) | क्रोधः | हानिः |
| २) | भीतिः | नैस्वं |

| | | |
|---|---|---|
| ३) | धनप्राप्तिः | धनप्राप्तिः |
| ४) | नृपपूजा | नृपपूजा |
| ५) | महद्धनम् | महद्भयम् |
| ६) | चौर्यम् | चौरभयम् |
| ७) | विपुत्रता | अतिक्रोधः |
| ८) | हानिः | भीतिः |

**(२)दक्षिणद्वारम्-**

| **क्र.** | **कश्यपसंहिता** | **नारदसंहिता** |
|---|---|---|
| १) | बन्धनं | निधनं |
| २) | निधनं | बन्धनं |
| ३) | प्रीतिः | भीतिः |
| ४) | अर्थप्राप्तिः | अर्थप्राप्तिः |
| ५) | धनागमः | धनवर्धनम् |
| ६) | अरुजत्वं | अनातङ्कः |
| ७) | व्याधिभयं | व्याधिभयम् |
| ८) | निर्धनता | निःस्वत्वम् |

**(३)पश्चिमद्वारम्-**

| **क्र.** | **कश्यपसंहिता** | **नारदसंहिता** |
|---|---|---|
| १) | पुत्रहानिः | पुत्रहानिः |
| २) | शत्रुवृद्धिः | शत्रुवृद्धिः |
| ३) | लक्ष्मीप्राप्तिः | लक्ष्मीप्राप्तिः |

| | | |
|---|---|---|
| ४) | धनागमः | धनागमः |
| ५) | धान्यप्राप्तिः | सौभाग्यता |
| ६) | सौभाग्यता | अतिदौर्भाग्यता |
| ७) | दुःखं | दुःखं |
| ८) | शोकः | शोकः |

(४)उत्तरद्वारम्-

| क्र. | कश्यपसंहिता | नारदसंहिता |
|---|---|---|
| १) | हानिः | कलत्रहानिः |
| २) | स्त्रीदूषणं | निःस्वत्वम् |
| ३) | निःस्वता | हानिः |
| ४) | बहुधान्यं | धान्यम् |
| ५) | धनागमः | धनागमः |
| ६) | सम्पद्वृद्धिः | सम्पद्वृद्धिः |
| ७) | महाभयम् | महाभीतिः |
| ८) | व्याधिः | रोगः |

क.सं.–वास्तुपूजायां गन्धदूर्वाक्षतादिभिः –इति कथनं प्राप्यते। ना.सं.–वास्तुपूजायां दूर्वादध्यक्षतादिभिः –इति कथनं प्राप्यते। क.सं.–वास्तुपूजायां वास्तुनैवेद्यविषये –अपूपैर्भूरिनैवेद्यं समर्पयेत् –इति कथनं प्राप्यते। ना.सं.–वास्तुपूजायां नैवेद्यविषये केवलं भूरिनैवेद्यं समर्पयेत् –इति कथनं प्राप्यते।

**कश्यपसंहिता अध्यायाः–३७ तः ३९**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः–३८–३९**

क.सं.–गृहप्रवेशविषये दिवाप्रवेशः सम्पत्तिप्रदः, निशिप्रवेशो मङ्गलप्रदः। व.सं.–दिवाप्रवेशः शुभदः सुपुत्रपौत्राभिवृद्धिदः, रात्रौ शुभदः। क.सं.–माघादिमासानां गृहप्रवेशफलं विस्तरेण न प्राप्यते। व.सं.–माघादिमासानां गृहप्रवेशफलं सविस्तरेण भिन्नं भिन्नं प्राप्यते। क.सं.–गृहप्रवेशे जन्मलग्नात् द्वादशाष्ट(१२–८)भावगतश्चन्द्रस्त्याज्यः, जन्मभे जन्मलग्ने, लग्नादुपचयभाव(३–६–१०–११)गते प्रवेशः शुभप्रदः। अन्यथा दुःखनिःस्वता प्राप्नुयात्। व.सं.–कर्ता विलग्नाद् जन्मराशेर्द्वादशभावस्थितित्वे सविस्तारेण वर्णनं कृतमस्ति। क.सं.–स्वमतोक्तं स्वरचितमेवं वास्तुशास्त्रज्ञानं प्रवक्ष्यति। व.सं.– ब्रह्मणा पूर्वोक्तं वास्तुज्ञानं प्रवक्ष्यति।

**वास्तुभूमेर्गन्धः–**

| **क्र.** | **विप्रादिवर्णः** | **कश्यपसंहिता** | **वसिष्ठसंहिता** |
|---|---|---|---|
| १) | विप्रः | मधु | मधुरः |
| २) | क्षत्रियः | पुष्पम् | पुष्पम् |
| ३) | वैश्यः | सुरा | आम्लम् |
| ४) | शूद्रः | मांसम् | मांसम् |

**विप्रादीनां वर्णक्रमेण भूमिरसः(स्वादः)–**

| **क्र.** | **विप्रादिवर्णः** | **कश्यपसंहिता** | **वसिष्ठसंहिता** |
|---|---|---|---|
| १) | विप्रः | मधुरः | मधुरः |
| २) | क्षत्रियः | कटुः | कटुः |
| ३) | वैश्यः | कषायः | आम्लः |
| ४) | शूद्रः | तिक्तः | तिक्तः |

**पूर्वादिदिशायां द्वारस्यायामष्टभागानुसारतः फलम्–**

(१)पूर्वद्वारम्-

| क्र. | कश्यपसंहिता | वसिष्ठसंहिता |
|---|---|---|
| १) | क्रोधः | दुःखम् |
| २) | भीतिः | शोकः |
| ३) | धनप्राप्तिः | धनप्राप्तिः |
| ४) | नृपपूजा | नृपपूजा |
| ५) | महद्धनम् | महद्धनम् |
| ६) | चौर्यम् | स्त्रीजन्म |
| ७) | विपुत्रता | पुत्रता |
| ८) | हानिः | हानिः |

(२)दक्षिणद्वारम्-

| क्र. | कश्यपसंहिता | वसिष्ठसंहिता |
|---|---|---|
| १) | बन्धनं | निधनं |
| २) | निधनं | बन्धनं |
| ३) | प्रीतिः | भीतिः |
| ४) | अर्थप्राप्तिः | पुत्रवाप्तिः |
| ५) | धनागमः | धनागमः |
| ६) | अरुजत्वं | यशोलाभः |
| ७) | व्याधिभयं | चौरभयम् |
| ८) | निर्धनता | रोगभयम् |

(३)पश्चिमद्वारम्-

| क्र. | कश्यपसंहिता | वसिष्ठसंहिता |
|---|---|---|
| १) | पुत्रहानिः | शत्रुवृद्धिः |
| २) | शत्रुवृद्धिः | पुत्रहानिः |
| ३) | लक्ष्मीप्राप्तिः | लक्ष्मीप्राप्तिः |
| ४) | धनागमः | धनागमः |
| ५) | धान्यप्राप्तिः | सौभाग्यता |
| ६) | सौभाग्यत्ता | धनलाभः |
| ७) | दुःखं | दुःखम् |
| ८) | शोकः | शोकः |

(४)उत्तरद्वारम्-

| क्र. | कश्यपसंहिता | वसिष्ठसंहिता |
|---|---|---|
| १) | हानिः | निःस्वं |
| २) | स्त्रीदूषणं | स्त्रीदूषणं |
| ३) | निःस्वता | हानिः |
| ४) | बहुधान्यं | सम्पत्प्राप्तिः |
| ५) | धनागमः | सुखाागमः |
| ६) | सम्पद्वृद्धिः | दुःखागमः |
| ७) | महाभयं | शत्रुता |
| ८) | व्याधिः | बाधा |

**क.सं.-गृहनिर्माणे मासाः-** माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-श्रावण-कार्त्तिक-मार्गशीर्षाः। **व.सं.-गृहनिर्माणे मासाः-** तपो(माघ)-तपस्य (फाल्गुन)-माधव

(वैशाख)-इष (आश्विन) - नभस् (श्रावण) - ऊर्जा: (कार्त्तिका:)। **क.सं.-वास्तुकुक्षिभागे ब्राह्मणादीनामङ्गुलात्मकं शङ्कुमानम्-** १)विप्राणां-२२, २)क्षत्रियाणां-२३, ३)वैश्याणां-१६, ४)शूद्राणां-१२ व.सं.-सर्वेषां वर्णानां केवलमेकप्रकारमेवं वितस्तिमात्र: शङ्कु: कथित:।

**क.सं.-षोडशगृहनामानि-**

(१)ध्रुवं, (२)धन्यं, (३)जयं, (४)नन्दं, (५)खरं, (६)कान्तं, (७)मनोरमं, (८)सुमुखं, (९)दुर्मुखं (१०)क्रूरं, (११)शत्रुं, (१२) स्वर्णप्रदं, (१३)क्षयं, (१४)आक्रन्दं, (१५)विपुलाख्यं, (१६)विजयम्।

**व.सं.-षोडशगृहनामानि-**

(१) ध्रुवं, (२)धान्यं, (३)जयं, (४)नन्दं, (५)खरं, (६)कान्तिं, (७)मनोरमं, (८)सुवक्त्रं, (९)दुर्मुखं (१०)क्रूरं, (११)विपक्षं, (१२) धनदं, (१३)क्षयं, (१४)आक्रन्दं, (१५)विपुलं, (१६)विजयम्।

**जलस्त्रावे अष्टविधदेशप्रमाणम्-**

| **क्र.** | **कश्यपसंहिता** | **वसिष्ठसंहिता** |
|---|---|---|
| १) | पाञ्चालमानम् | पाञ्चालमानम् |
| २) | वैदेहमानम् | वैदेहमानम् |
| ३) | कौरवमानम् | कौरवमानम् |
| ४) | विजयमानम् | कन्यकामानम्(कान्यकुब्जमानम्) |
| ५) | मागधमानम् | मागधमानम् |
| ६) | शूरसेनमानम् | शूरसेनमानम् |
| ७) | गान्धरमानम् | गान्धरमानम् |

८)		आवन्तिकम्		आवन्तिकम्

क.सं.- वास्तुपूजनप्रकरणेऽन्तिमश्कोलद्वयं प्रायेण समानरूपेण प्राप्यते।

**यात्रा**

**कश्यपसंहिता अध्यायः-३५**

**बृहत्संहिता अध्यायाः-८६ तः ९० तथा ९६**

क.सं.- स्वमतोक्तं नृपादीनां यात्राविषयकं रोचकं वर्णनं प्राप्यते। बृ.सं.- विविधर्षिमतानि दृष्ट्वा यात्रा-शकुनानि लिखितानि सन्ति। क.सं.-यात्रामुहूर्तस्य सम्पूर्णं विवेचनं प्राप्यते। बृ.सं.-यात्रामुहूर्तस्य शकुनविषयकं विवरणं प्राप्यते। क.सं.-द्वादशी-षष्ठी-रिक्ता(४-९-१४)-पूर्णिमा-मासादि(शुक्लप्रतिपद्)तिथिषु यात्रा मृत्युकरा निर्धनत्वकारिणी च। बृ.सं.-एतादृशं यात्रावर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-नक्षत्रवशतो यात्राफलम्- हस्त-मृगशीर्ष-पुनर्वसु-अश्विनी-श्रवण-अनुराधा-रेवती-पुष्यनक्षत्रेषु यात्राभीष्टफलदा भवेत्। बृ.सं.-नक्षत्रवशतो यात्राफलविवेचनं न प्राप्यते।

क.सं.- मन्द(शनि)-इन्दु(सोम)दिनयोः(वारयोः) प्राच्यां गमनं वर्जयेत्। गुरोर्वारे दक्षिणदिशं त्यजेत्। शुक्र-अर्कवारे प्रतीचीं(पश्चिमां) दिशं न गच्छेत्। बुध-भौमवारयोरुत्तरदिशं वर्जयेत्। बृ.सं.-एतादृशं वारवशाद् यात्राफलं नोक्तम्।

क.सं.-ज्येष्ठा-पू.भा.-रोहिणी-उ.फा.-नक्षत्राणि पूर्वादिक्रमाद् दिशायां शूलरूपा भवन्ति। किन्तु अनुराधा-अश्विनी-पुष्य-हस्तनक्षत्राणि सर्वासु दिक्षु शुभदानि स्मृतानि। बृ.सं.-एतादृशं यात्राफलविवेचनं नोक्तम्। क.सं.- युद्धयात्रायां चन्द्रो यायी सूर्यो स्थायी वर्तते। एतद् वशाद् राजा जय-पराजयमाप्नोति। बृ.सं.-एतादृशं यायि-स्थायियात्राफलविवेचनं नोक्तम्। क.सं.-विविधशकुन-ग्रह-योग-नक्षत्र-राशि-लग्न-

वार-तिथ्यादिकं समाश्रित्य यात्रावर्णनं कृतम्। बृ.सं.-केवलं पशुपक्ष्यादिनिमित्तशकुनादिभ्यो यात्राविवेचनं कृतम्।

**कश्यपसंहिता अध्यायः-३५**

**नारदसंहिता अध्यायः-३३**

क.सं.-हस्त-मृगशीर्ष-पुनर्वसु-अश्विनी-श्रवण-अनुराधा-रेवती-पुष्यनक्षत्रेषु यात्राभीष्टफलदा भवेत्। ना.सं.-कृत्तिका-धनिष्ठा-हस्त-मृगशीर्ष-अश्विनी-श्रवण-अनुराधा-रेवतीपुष्यनक्षत्रेषु यात्राभीष्टफलदा भवेत्। ना.सं.-विप्रक्षोभे राजक्षोभे प्रतिशुक्रदोषो न विद्यते। क.सं.- प्रतिशुक्रदोषविषय एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-ज्येष्ठा-पू.भा.-रोहिणी-उ.फा.-नक्षत्राणि पूर्वादिक्रमाद् दिशायां शूलरूपकाणि भवन्ति। किन्तु अनुराधा-अश्विनी-पुष्य-हस्तनक्षत्राणि सर्वासु दिक्षु शुभदानि स्मृतानि। ना.सं.-एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-यात्रानिषेधकालः- उपनयन-उत्सव-विवाह-प्रतिष्ठा-सूतक(मरण-जननसूतकं)समाप्तिपर्यन्तं यात्रा जिजीविषुर्न कुर्यात्। ना.सं.-ग्रहण-उपनयन-उत्सव-विवाह-शवसूतकेषु यात्रा बुद्धिमान्नरो न कारयेत्।

क.सं.- यात्रायां प्रतिकूलतावशाद् यदा नृपतिः स्वयं प्रयाणेऽशक्तस्तदा छत्र-ध्वज-अश्व-वस्त्र-अक्षतादिभिः स्वस्थानात् निर्गममुहूर्ते शतद्वयं वा शतं वा दश दण्डानां प्रस्थानं यात्रा-प्रस्थानं कथ्यते। ना.सं.- यात्रायां प्रतिकूलतावशाद् यदा नृपतिः स्वयं प्रयाणेऽशक्तस्तदा छत्र-ध्वज-अश्व-वस्त्र-अक्षतादिभिः स्वस्थानात् निर्गममुहूर्ते शतद्वयं वा शतं वा दश धनुषाणां वा ४० धनुषाणां वा १२ धनुषणां वा स्वगृहादन्यगृहं प्रस्थानमेवं यात्रा-प्रस्थानं कथ्यते।

क.सं.- यात्रायां विरुद्धशकुनपरिहारार्थं प्राणायामप्रयोगः प्रदत्तः। यदा यात्रासमये यायी विरुद्धशकुनं पश्यति, तदावश्यकयात्रायां प्राणायामत्रयं कुर्यात्। तदापि

पुनर्विरुद्धशकुने षट् प्राणायामाः कर्तव्याः। तथाप्यशुभमेव शकुनं दृश्यते तदा पुनः प्राणायामाः, शान्त्या यायाद् दिनान्तरे वा पुनरागम्यान्यदिने यात्रा कर्तव्या। ना.सं.- एतादृशं यात्रायां विरुद्धशकुनपरिहारार्थं प्राणायामप्रयोगवर्णनं न प्राप्यते।

**कश्यपसंहिता अध्यायाः-३५**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः-३७**

क.सं. - अष्टमी - द्वादशी - षष्ठी - रिक्ता (४-९-१४)- पूर्णिमा- मासादि (शुक्लप्रतिपद्)- तिथिषु यात्रा मृत्युकरा निर्धनत्वं च करोति। व.सं.- षष्ठी-रिक्ता (४-९-१४) तिथिषु यात्रा कलहप्रदा वा मृत्युप्रदा भवेत्। अष्टमी शोकदायकी भवेत्। क.सं.- हस्त - मृगशीर्ष - पुनर्वसु - अश्विनी - श्रवण - अनुराधा -रेवती- पुष्यनक्षत्रेषु यात्राभीष्टफलदा भवेत्। व.सं.- धनिष्ठा-हस्त-मृगशीर्ष-पुनर्वसु-अश्विनी- श्रवण-अनुराधा-रेवती-पुष्यनक्षत्रेषु यात्राभीष्टफलदा भवेत्। अत्र धनिष्ठानक्षत्रं विशेषतो दृश्यते।

क.सं.- अष्टममुहूर्ते(मध्याह्ने) योऽभिजित्स्यात्, तत्र यातॄणां याम्यदिग्गमनं वर्जयित्वान्यत्राभीष्टफलसिद्धिर्भवेत्। व.सं.- अष्टममुहूर्ते(मध्याह्ने) योऽभिजित्स्यात्, तत्र याम्यदिग्गमनसहितं यातॄणां गमनेऽभीष्टफलसिद्धिर्भवेत्। क.सं.- सन्मुखे शुक्रे यात्रानिषेध एव कृतः। व.सं.-सन्मुखे शुक्र आवश्यकयात्रायां सन्मुखशुक्रशान्तिः कर्तव्या। क.सं.- यात्रायां प्रतिकूलतावशान्नृपतेः स्वस्थानान्निर्गममुहूर्ते शतद्वयं वा शतं वा दश दण्डानां प्रस्थानं यात्रा-प्रस्थानं कथ्यते। व.सं.- यात्रायां प्रतिकूलतावशाद् नृपतेः स्वस्थानान्निर्गममुहूर्ते पञ्चशतं धनुषाणां वा धनुषशतद्वयं वा दश धनुषाणां स्वगृहादन्यन्यगृहं प्रस्थानमेवं यात्रा-प्रस्थानं कथ्यते। क.सं.-आवश्यकयोगसहितं यात्राकुण्डलीविषयकं ग्रह-राशि-नक्षत्र-वार-तिथ्यादिरूपं विवेचनं प्राप्यते। व.सं.-

आवश्यकयोगसहितमतीवविस्तारेण यात्राकुण्डलीविषयकं ग्रह–राशि–नक्षत्र–वार–तिथ्यादीनां विवेचनं प्राप्यते। कश्यप–वसिष्ठोक्ता दशदिक्पालानां स्वरूपवर्णनमन्त्राः प्रायेण पूर्णतया वा समाना दृश्यन्ते।

**उत्पातः–**

**कश्यपसंहिता अध्यायाः–४५ तः४८**

**बृहत्संहिता अध्यायाः–४६ एवं ३१तः३९**

क.सं.–केवलं स्वमतेन विविधोत्पातानां विवरणं कृतम्। बृ.सं.– गर्गोक्तं मतमाश्रित्य तत्र विविधोत्पातानां संक्षेपतो वर्णनं कृतम्। क.सं.–काकसंयोगोत्पातस्तस्य शान्तिविधिश्च सविस्तारेण विवर्णितः। बृ.सं.–काकसंयोगोत्पातस्तस्य शान्तिविधेश्च विवरणं न प्राप्यते।

क.सं.–कपोत–मधुवल्मीकदोषस्तस्य शान्तिविधिश्च सविस्तरेण विवर्णितः। बृ.सं.– कपोत–मधुवल्मीकदोषस्तस्य शान्तिविधेश्च विवरणं न प्राप्यते। क.सं.–शिथिलीजननदोषस्तस्य शान्तिविधिश्च सविस्तरेण विवर्णितः। बृ.सं.–शिथिलीजननदोषस्तस्य शान्तिविधेश्च विवरणं न प्राप्यते। क.सं.–शरीरोपदोषाः–(दन्तच्छेदः–काकपातः–सरटीपतनादिदोषः) तेषां विवरणं शान्तिविधिसहितं च प्राप्यते। बृ.सं.–शरीरोपदोषाः–(दन्तच्छेदः–काकपातः–सरटीपतनादिदोषः) तेषां शान्तिविधेश्च विवरणं न प्राप्यते। क.सं.–शिथिलीजननदोषस्तस्य शान्तिविधिश्च सविस्तरेण विवर्णितः। बृ.सं.–शिथिलीजननदोषस्तस्य शान्तिविधेश्च विवरणं न प्राप्यते। देवतामूर्तिविकृतिः, वृक्षविकृतिः, सस्यविकृतिः, वृष्टिविकृतिः, छायाविकृतिः, जलविकृतिः, प्रसवविकृतिः, वायव्यवैकृतम्, पशु–पक्षिवैकृतम्, इन्द्रध्वजादिवैकृतम् –

इत्यादीनामुत्पातानां लक्षणं तत्फलं च गर्गोक्तमतामाश्रित्यात्यन्तसंक्षेपतः शान्तिविधिः प्रदर्शितः। कश्यसंहितोक्तमेवं बृहत्संहितोक्तमुल्कालक्षणं प्रायेण समानं वर्तते।

क.सं.–मयूरपत्रसङ्काशो परिवेषो वातवृष्टिकारको भवेत्। बृ.सं.–एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते, किन्तु मयूरकण्ठसङ्काशो परिवेषोऽतिवृष्टकारको भवति। क.सं.– अहर्निशं प्रतिदिनमरुणौ चन्द्रार्कौ यदा भवेतां तदा परिवेषो नृपवधं कुरुते। क.सं.–परिवेषो यदा द्विमण्डलात्मको दृश्यते तदा चमूनाथं नाशयति। त्रिमण्डलात्मको दृश्यते तदा नृपनाशो भवति। क.सं.–प्रतिपदादिषु तिथिषूत्पन्नपरिवेषस्य फलं विवर्णितम्। बृ.सं.–प्रतिपदादिषु तिथिषूत्पन्नपरिवेषस्य फलविवरणं न प्राप्यते।

क.सं.–नृक्षयं व्योम्निजं चापं भूमिजं सस्यहानिदम्–इत्युक्तम्। बृ.सं.–भूमिजं शुभदम् –इत्युक्तम्। व्योम्निजचापस्य वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.–गन्धर्वनगरविषये–रात्रौ यदा गन्धर्वनगरं दृश्यते तदा धराधीशविनाशकं भवेत्। बृ.सं.– रात्रौ गन्धर्वनगरस्य किमपि वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.– सूर्यस्योपरि दृश्यमाणः प्रतिसूर्यो नृपनाशको भवेत्। सूर्यस्याधोभागे दृश्यमाणः प्रतिसूर्यो जनानां नाशको भवेत्। यदा तीक्ष्णांशोर्वा शीतद्युतः प्रतिसूर्यो दृश्यते, तदा सम्पूर्णस्य जगतो विनाशो भवेत्। बृ.सं.–एतादृशं प्रतिसूर्यस्य किमपि वर्णनं न प्राप्यते।

क.सं.–निर्घातविषये– यदा निर्घातो रात्रौ तृतीयप्रहरे भवति तदा लिपिलेखकान् पीडां करोति। चतुर्थयाम इतरान् जनान् हन्ति। बृ.सं.– निर्घातविषये –यदा निर्घातो रात्रौ तृतीयप्रहरे भवति तदा तुरग–हस्तिनोः पीडां करोति। चतुर्थयामे पथिकान् हन्ति। क.सं.–यदा निर्घातस्य भीमगम्भीरशब्दः स्यात् तदा तदीश्वरस्य नाशं करोति। बृ.सं.–यदा भैरवजर्जरशब्द आयाति तदा तत्र दिग्हननं करोति। क.सं.–दिग्दाहविषये–यदा पञ्च

दिग्दाहदिवसास्तदा ते राष्ट्रविद्रावणप्रदा भवन्ति। बृ.सं.- पञ्चदिग्दाहविषयं किमपि वर्णनं न प्राप्यते।

क.सं.-रजोलक्षणविषये-सितेनाच्छादितग्राम-पर्वतादीनां विवरणं प्राप्यते। बृ.सं.- रजोलक्षणविषये-सितेनाच्छादितग्राम-पर्वतादीनां विवरणं न प्राप्यते। क.सं.- रजोलक्षणविषये-रात्रिचतुष्टयपर्यन्तं रजो भवति तदा ईतिदुर्भिक्षमतुलं भवेत्। बृ.सं.- रजोलक्षणविषये- रात्रिचतुष्टयपर्यन्तं रजो भवति तदान्न-रसा विनाशं यान्ति। क.सं.- भूकम्पविषये भूमेर्कम्पनस्य कारणविषये केवलं स्वमतं लिखितम्। बृ.सं.- भूकम्पविषये भूमेः कम्पनस्य कारणविषये विविधर्षीणामाचार्याणां मत-मतान्तरसङ्ग्रहः कृतः। क.सं.-प्रायेण निखिलोत्पाताः क्षितीशानामनिष्टदा भवन्ति। बृ.सं.-एतादृशमन्वेषणात्मकं वर्णनमध्यायेऽस्मिन्न विद्यते।

**कश्यपसंहिता अध्यायाः-४५ तः ४८**

**नारदसंहिता अध्यायाः-३७ तः ५१**

क.सं.-काकमैथुनशान्त्यां विशेषः- ब्राह्मणान् षोडश वाष्टौ वा चत्वारो वेदपारगान् स्वस्तिवाचनपूर्वकं वरयेत्। तेषां मध्ये विशिष्टविद्वद्वरमाचार्यत्वेन नियोजयेत्। ततो गाणपत्यं, सावित्रं(सूर्यं), पञ्चदुर्गाजपं, रुद्रसूक्तं, श्रीसूक्तं द्विजो जपेत्। कुण्डे स्वगृह्योक्तविधानेनाग्निं स्थापयेत्। मखान्ते(ग्रहमखान्ते-ग्रहहोमान्ते प्रधानहोमे)समिधाज्येनान्नैरष्टोत्तरसंख्यया(१०८) (१)यत इन्द्र० (२)स्वस्तिदा० (३)त्र्यम्बकं० मन्त्रैः क्रमतो जुहुयात्। तिलव्रीहिभिर्जपसंख्यानुसारतो व्याहृतिहोमं कृत्वा पूर्णाहुतिं जुहुयात्। -इति विवरणं प्राप्यते। ना.सं.- काकमैथुनशान्त्यामेतादृशं वर्णनं भिन्नं प्राप्यते। किन्तु, मखान्ते(ग्रहमखान्ते-ग्रहहोमान्ते प्रधानहोमे)समिधाज्यान्नैरष्टोत्तरसंख्यया (१०८) त्र्यम्बकं० मन्त्रैर्वा मृत्युञ्जयमन्त्रेण

जुहुयात्। तिलव्रीहिभिः व्याहृतिहोमं कृत्वालङ्कृतस्रुच्या पूर्णाहुतिं जुहुयात्। -इति विवरणं प्राप्यते। क.सं.-काकमैथुनशान्त्यां ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा शान्तिवाचनपूर्वकमेतच्छान्तिविधिं भक्त्या कुर्यात्। तेन दोषात् प्रमुच्यते। ना.सं.-काकमैथुनशान्त्यां ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वस्तिवाचनपूर्वकमेतच्छान्तिविधिं भक्त्या कुर्यात्। तेन दोषात् प्रमुच्यते। क.सं.- शिथिलीजननस्य शुभाशुभफलविवेचनं शान्तिश्च विशदीकृतः।

**विविधस्थाने शिथिलीजननस्य फलम्-**

(१)मन्दिरस्य मध्ये-अशुभफलप्राप्तिः। नगरजनानां सप्ताहाभ्यन्तरे व्याधिपीडा भवेत्।

(२)मन्दिरस्य प्राच्यां- अष्टदिनाल्लाभः पश्चाद् व्याधिस्तु तत्परे।

(३) मन्दिरस्याग्नेय्यां- त्रिदिनाल्लाभः पश्चादर्धं तस्कराद्भयम्।

(४)मन्दिरस्य याम्ये-अष्टाहादिष्टसिद्धिस्ततः पत्नीविनाशनम्।

(५)मन्दिरस्य पश्चिमे-सप्ताहाद् धान्यलाभस्ततो नृपतिभयम्।

(६)मन्दिरस्य वायव्ये- प्रीतिरष्टाहात्परतः पशुनाशनम्।

(७)मन्दिरस्योत्तरे- त्रिरात्रतः शत्रुहानिः पश्चाद्धनक्षयः।

(८)मन्दिरस्येशाने-पञ्चाहात्प्रीतिः परतः पशुनाशनम्।

(९)मन्दिरस्य द्वारे- विनाशः स्त्रीहानिः पश्चात्तत्पशुनाशनम्।

(१०)शयनस्थाने- प्रीतिस्त्रिरात्रात्पत्नीविनाशनम्।

(११)पशुस्थाने -शिथिलीजनने पशुहानिः।

(१२)अम्बुभाण्डके-दासीनाशः।

(१३)सौवीरभाण्डे-स्त्रीनाशः।

(१४)अन्नभाण्डे- सुहृन्मृतिः।

(१५) तैलाज्यमध्वादीनां घटेषु- कुटुम्बहानिः।

ना.सं.-एतादृशं किमपि शिथिलीजननस्य शुभाशुभफलविवेचनं शान्तिवर्णनं च न कृतम्।

क.सं.- उल्कालक्षणविषये-इन्द्रचापनिभोल्का राज्यं, खेलनोल्का जलनाशदा भवति। यो नरो विद्युद्भावं(उल्काज्ञानं) वेत्ति स एव ज्योतिषो भुवि। ना.सं.- उल्कालक्षणविषये -इन्द्रचापनिभा -इत्यादिकं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.- परिवेषविषये-मयूरपत्रसदृशो पीताभः परिवेषो वातवृष्टिकृद्भवेत्। ना.सं.- परिवेषविषये-मयूरपत्रसदृशो पीताभः परिवेषो न वर्णितः। क.सं.-पञ्चदिग्दाहदिवसा राष्ट्रविद्रावणप्रदा भवन्ति। ना.सं.-एतादृशं किमपि दिग्दाहविषये विवेचनं न प्राप्यते।

संहिताभ्यां (क.सं.-ना.सं.) परिवेष-इन्द्रचाप-प्रतिसूर्य-निर्घात-रजोलक्षण-दिग्दाह-भूकम्पादिविषयकाध्यायेषु -श्लोकाः श्लोकसङ्ख्या शब्दार्थादीनां प्रयोगश्च प्रायेण समानरूपो दृश्यते।

**कश्यपसंहिता अध्यायाः-४५ तः ४८**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः-४५**

क.सं.-दिव्य-भौम-अन्तरिक्षात्मकानां त्रिविधोत्पातानां विवरणं तच्छान्ति-विधिश्च विवर्णितः। व.सं.- भौमोत्पाताः शान्तिविधिना शान्तिं यान्ति। अन्तरिक्षात्मका उत्पाताः शान्तिविधिना मन्दा भवन्ति। किन्तु, दिव्योत्पाता होमान्नगोभूमि-दानैस्तत्कोटिहोमतः शमं यान्ति।

क.सं.-काकमैथुनशान्तिः- ब्राह्मणान् षोडश वाष्टौ वा चत्वारो वेदपारगान् स्वस्तिवाचनपूर्वकं वरयेत्। तेषां मध्ये विशिष्टविद्वद्वरमाचार्यत्वे नियोजयेत्। ततो गाणपत्यं, सावित्रं(सूर्यं), पञ्चदुर्गाजपं, रुद्रसूक्तं, श्रीसूक्तं च द्विजोत्तमा जपेयुः। कुण्डे

स्वगृह्योक्तविधानेनाग्निं स्थापयेत्। मखान्ते(ग्रहमखान्ते-ग्रहहोमान्ते प्रधानहोमे) समिधाज्येनान्नैरष्टोत्तरसंख्यया(१०८) (१)यत इन्द्र० (२)स्वस्तिदा० (३)त्र्यम्बकं० मन्त्रैः क्रमतो जुहुयात्। तिलव्रीहिभिर्जपसंख्यानुसारतो व्याहृतिहोमं कृत्वा पूर्णाहुतिं जुहुयात्। व.सं.- काकमैथुनशान्तिः-अपमृत्युमपक्षुधसमपि० मन्त्रद्वयेनोपचारान्कुर्यात्। मखान्ते(ग्रहमखान्ते-ग्रहहोमान्ते प्रधानहोमे)समिधाज्येनान्नैः ८०० वा २८ (१)मृत्यु० (२)वारुण० (३)ग्रहमन्त्रैः० क्रमतो जुहुयात्।

क.सं.-विविधोत्पातानि -उल्का - परिवेष - इन्द्रचाप - गन्धर्वनगर -प्रतिसूर्य -निर्घात-दिग्दाह-रजोलक्षण-भूकम्पलक्षणादीनामावश्यकं लक्षणं विवरणसहितं तत्तच्छान्तिविधिः पूर्णतया विशदीकृतः। व.सं.-विविधोत्पातानि-उल्का-परिवेष-इन्द्रचाप-गन्धर्वनगर-प्रतिसूर्य-निर्घात-दिग्दाह-रजोलक्षण-भूकम्पलक्षणादीनामत्य-न्तस्वल्पं विवरणं प्राप्यते, किन्तु तदुत्पातानां लक्षण-फलविवेचनमावश्यकमपि न प्राप्यते। उक्तविविधोत्पातशान्तिविधिरतीव विस्तारेण विशदीकृतः। उत्पातानामध्ययन इयं संहिता न पूर्णरूपो ग्रन्थः।

**प्रतिष्ठा-**

**कश्यपसंहिता अध्यायः-४१**

**बृहत्संहिता अध्यायः-४५**

क.सं.-सुरप्रतिष्ठाकालः- अस्त-बाल-वृद्धत्वरहिते गुरौ, माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासे, शुक्लपक्षतः कृष्णपक्षार्ध-कृष्णाष्टमीतिथिपर्यन्तं, देवानां स्थापनं(प्राणप्रतिष्ठा) शुभा। बृ.सं.-एतादृशं गुर्वस्तमौढ्यविचारः, प्रतिष्ठामासविषयकं, प्रतिष्ठातिथिविषयकं, विवरणं न प्राप्यते। क.सं.- या तिथिर्यस्य देवस्य (यथा-चतुर्थीस्वामी गणेशः -इत्यादिकं ज्ञायेत्), सा तिथिस्तस्य(तिथिस्वामि)देवतानां

प्रतिष्ठापने शुभदा स्मृता। वर्ज्यम्-शुक्लप्रतिपदां, रिक्ताम् (४-९-१४), अमावास्यां, दिनक्षयं स्थापने परिवर्जयेत्। बृ.सं.-एतादृशं प्रतिष्ठापनतिथिविषयकं विवरणं न प्राप्यते।

**क.सं.- सुरप्रतिष्ठाकाले नक्षत्राणि-** मूल-ज्येष्ठा-आश्लेषा-पू.षा.-पू.भा.-पू.फा.-कृत्तिका-विशाखा-मघा-भरणी -इत्येतानि त्यक्त्वान्यनक्षत्रेषु सुराणां स्थापनं शुभम्। बृ.सं.- सुरप्रतिष्ठाकाले नक्षत्राणि- उत्तरात्रय-रोहिणी-मृगशीर्ष-रेवती-चित्रा-अनुराधा-श्रवण-पुष्य-स्वातीनक्षत्रेषु सुराणां स्थापनं शुभम्। क.सं.- कर्ता सूर्य-चन्द्रताराबलान्विते, पञ्चाङ्गशुद्धिसंयुक्ते, दिनस्य पूर्वाह्णे, स्वजन्मराशेरष्टमोदयरहिते, पञ्चेष्टिकयुतलग्ने, अष्टमलग्नशुद्धियुक्ते, लग्नं शुभग्रहेक्षितयुक्ते, लग्नं न पापैरीक्षितयुते देवतास्थापनं शुभं भवेत्। बृ.सं.-एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते, किन्तु चन्द्र-गुरुषड्वर्गे स्थिरलग्ने स्थिरनवमांशे देवतास्थापनं शुभं भवेत्।

क.सं.- प्रतिष्ठासमयकुण्डल्यां द्वादशभाव-ग्रहस्थित्यनुसारत: सविस्तरं शुभाशुभं सूक्ष्मफलकथनं च प्रदत्तम्। बृ.सं.-एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। क.सं.-दक्षिणाहीनं देवताप्रतिष्ठाकर्तारं हन्ति, मन्त्रहीनं त्वर्त्विजं हन्ति, लक्षणहीनं तु श्रियं हन्ति। अतो विवेकहीनानां प्रतिष्ठासदृशो कोऽपि रिपुर्नास्ति। बृ.सं.-एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते। बृ.सं.-विविधमूर्तीनां सलक्षणात्मकं विवरणं अध्यायक्र.-५८ प्रतिमालक्षणाध्याये प्राप्यते। प्रतिमाविकारास्तेभ्य उत्पन्नविविधशुभाशुभफलानि-देवताप्रतिष्ठापनविधि: संक्षेपतो विवर्णित:। क.सं.-एतादृशं वर्णनं न प्राप्यते।

**कश्यपसंहिता अध्याय:-४१**

**नारदसंहिता अध्याय:-३०**

क.सं.–सुरप्रतिष्ठाकाले नक्षत्राणि– मूल–ज्येष्ठा–आश्लेषा–पू.षा.–पू.भा.–पू.फा.–कृत्तिका–विशाखा–मघा–भरणी –इत्येतानि नक्षत्राणि त्यक्त्वान्यनक्षत्रेषु सुराणां स्थापनं शुभम्। ना.सं.–सुरप्रतिष्ठाकाले नक्षत्राणि– अश्विनी–उत्तरात्रय–पुनर्वसु–रेवती–हस्त–पुष्य–रोहिणी–शतभिषा–श्रवण–अनुराधा–धनिष्ठानक्षत्रेषु सुराणां स्थापनं शुभम्।

**कश्यपसंहिता अध्यायः–४१**

**वसिष्ठसंहिता अध्यायः–४०**

क.सं.–सुरप्रतिष्ठाकाले नक्षत्राणि– मूल–ज्येष्ठा–आश्लेषा–पू.षा.–पू.भा.–पू.फा.–कृत्तिका–विशाखा–मघा–भरणी –इत्येतानि नक्षत्राणि त्यक्त्वान्यनक्षत्रेषु सुराणां स्थापनं शुभम्। व.सं.–सुरप्रतिष्ठाकाले नक्षत्राणि–हस्त–चित्रा–स्वाती–अनुराधा–ज्येष्ठा–मूल–श्रवण–धनिष्ठा–शतभिषा–अश्विनी–रेवती–पुनर्वसु–पुष्य–त्रिरुत्तरा–रोहिणी–मृगशीर्षनक्षत्रेषु सुराणां स्थापनं विवर्णितम्।

क.सं.–दक्षिणाहीनं देवताप्रतिष्ठाकर्तारं हन्ति, मन्त्रहीनं त्वर्त्विजं हन्ति, लक्षणहीनं तु श्रियं हन्ति। अतो विवेकहीनानां प्रतिष्ठासदृशः कोऽपि रिपुर्नास्ति। व.सं.– दक्षिणाहीनं देवताप्रतिष्ठाकर्तारं हन्ति, मन्त्रहीनं त्वर्त्विजं हन्ति, लक्षणहीनं तु कर्तृभार्यानाशं करोति।

**वस्त्रलक्षणम्–**

**कश्यपसंहिता अध्यायः–४२**

**बृहत्संहिता अध्यायः–४०**

**क.सं.–अश्विन्यादिनक्षत्रानुसारेण प्रतिनक्षत्रस्य नूतनवस्त्रधारणे फलम्–**

(१)अश्विनी–वस्त्रलाभः। (२)भरणी–अर्थहानिः। (३)कृत्तिका–वह्निदाहः।

(४)रोहिणी- धनागमः।  (५)मृगशीर्षम्-आखुभीतिः। (६)आर्द्रा-मृत्युः।

(७)पुनर्वसुः-लक्ष्मीः।  (८)पुष्यः- अर्थलाभः।  (९)आश्लेषा- महागदः।

(१०)मघा-मृत्युः।  (११)पूर्वाफाल्गुनी- नृपभयम्।

(१२)उत्तराफाल्गुनी-सम्पल्लाभः। (१३)हस्तः- कर्मसिद्धिः।

(१४)चित्रा- अरिक्षयः। (१५)स्वाती- सुभोजनलाभः। (१६)विशाखा- राजपूजा।

(१७)अनुराधा- मित्रप्राप्तिः। (१८)ज्येष्ठा-युवतीयुतिः।

(१९)मूलम्-जलप्लुतिः (जलभयम्)।  (२०)पूर्वाषाढा-रोगभीतिः।

(२१)उत्तराषाढा- मिष्टान्नलाभः। (२२) श्रवणम्-नयनामयः (नयनरोगः)

(२३)धनिष्ठा-धान्यलाभः।  (२४)शतभिषा (शततारका)- विषभयम्।

(२५)पूर्वाभाद्रपदा-सर्वसम्पत्प्राप्तिः। (२६)उत्तराभाद्रपदा-धनलाभः।

(२७)रेवती- जलागमः।

**बृ.सं.-अश्विन्यादिनक्षत्रानुसारेण प्रतिधिष्ण्यस्य नूतनवस्त्रधारणे फलम्-**

(१)अश्विनी-प्रभूतवस्त्रलाभः। (२)भरणी-वस्त्रहानिः। (३)कृत्तिका-वह्निदाहः।

(४)रोहिणी- धनागमः। (५)मृगशीर्षम्-आखुभीतिः। (६)आर्द्रा-मृत्युः।

(७)पुनर्वसुः-शुभस्य प्राप्तिः। (८)पुष्यः- धनलाभः। (९)आश्लेषा- वस्त्रनाशः।

(१०)मघा-मृत्युः।  (११)पूर्वाफाल्गुनी-नृपभयम्।

(१२)उत्तराफाल्गुनी-धनलाभः।  (१३)हस्तः- कर्मसिद्धिः।

(१४)चित्रा- शुभस्य प्राप्तिः।  (१५)स्वाती- भोजनलाभः।

(१६)विशाखा- जनप्रियता। (१७)अनुराधा- मित्रसमागमः।

(१८)ज्येष्ठा-वस्त्रक्षयः।  (१९)मूलम्- जलप्लुतिः(जलभयम्)।

(२०)पूर्वाषाढा-रोगः। (२१)उत्तराषाढा- मिष्टान्नलाभः।

(२२)श्रवणम्-नयनामय:(नयनरोग:) (२३)धनिष्ठा-अन्नलाभ:।

(२४)शतभिषा(शततारका)- विषस्याधिकं भयम्। (२५)पूर्वाभाद्रपदा-जलभयम्।

(२६)उत्तराभाद्रपदा-पुत्रलाभ:। (२७)रेवती- रत्नलाभ:।

**कश्यपसंहिता अध्याय:-४२**

**नारदसंहिता अध्याय:- न प्राप्यते।**

**कश्यपसंहिता अध्याय:-४२**

**वसिष्ठसंहिता अध्याय:- ४४**

**क.सं.-अश्विन्यादिनक्षत्रानुसारेण प्रतिनक्षत्रस्य नूतनवस्त्रधारणे फलम्-**

(१)अश्विनी-वस्त्रलाभ:। (२)भरणी-अर्थहानि:। (३)कृत्तिका-वह्निदाह:।

(४)रोहिणी- धनागम:। (५)मृगशीर्षम्-आखुभीति:। (६)आर्द्रा-मृत्यु:।

(७)पुनर्वसु:-लक्ष्मी:। (८)पुष्य:- अर्थलाभ:। (९)आश्लेषा- महागद:।

(१०)मघा-मृत्यु:। (११)पूर्वाफाल्गुनी- नृपभयम्।

(१२)उत्तराफाल्गुनी-सम्पल्लाभ:। (१३)हस्त:- कर्मसिद्धि:।

(१४)चित्रा- अरिक्षय:। (१५)स्वाती- सुभोजनलाभ:।

(१६)विशाखा- राजपूजा। (१७)अनुराधा- मित्रप्राप्ति:। (१८)ज्येष्ठा-युवतीयुति:।

(१९)मूलम्- जलप्लुति:(जलभयम्)।

(२०)पूर्वाषाढा-रोगभीति:। (२१)उत्तराषाढा- मिष्टान्नलाभ:।

(२२)श्रवणम्-नयनामय:(नयनरोग:)(२३)धनिष्ठा-धान्यलाभ:।

(२४)शतभिषा(शततारका)- विषभयम्। (२५)पूर्वाभाद्रपदा-सर्वसम्पत्प्राप्ति:।

(२६)उत्तराभाद्रपदा-धनलाभ:। (२७)रेवती- जलागम:।

**व.सं.-अश्विन्यादिनक्षत्रानुसारेण प्रतिधिष्ण्यतो नूतनवस्त्रधारणे फलम्-**

(१)अश्विनी-निरन्तरं वस्त्रलाभ:। (२)भरणी-अधिकक्लेशो धनहानि:।

(३)कृत्तिका-क्षितिपतिपूजानियत:। (४)रोहिणी- स्वमित्रतो विरोध:।

(५)मृगशीर्षम्- स्वमित्रतो हानि:। (६)आर्द्रा- स्थलजलकनकप्राप्ति:।

(७)पुनर्वसु:-अधिकयश:। (८)पुष्य:- सम्पूर्णलोकविरोध:।

(९)आश्लेषा- अग्निभयम्। (१०)मघा-पुत्रहानि:।

(११)पूर्वाफाल्गुनी- विरोध:। (१२)उत्तराफाल्गुनी-स्वबन्धुजनपूजा।

(१३)हस्त:-सर्वपालनम्। (१४)चित्रा-लाभ:। (१५)स्वाती- पशु-आभूषणलाभ:।

(१६)विशाखा- धनधान्यस्याधिकहानि:। (१७)अनुराधा- स्वजनानां विरोध:।

(१८)ज्येष्ठा-पत्नीकलह:। (१९)मूलम्- देवतापूजा। (२०)पूर्वाषाढा-हानि:।

(२१)उत्तराषाढा- नानाविधरोगाणि। (२२)श्रवणम्-सम्पूर्णगुणलाभ:।

(२३)धनिष्ठा-कदन्नाशनलाभ:। (२४)शतभिषा(शततारका)- सततं विदेशगमनम्।

(२५)पूर्वाभाद्रपदा-शत्रुभयम्। (२६)उत्तराभाद्रपदा-पतिताजनलाभ:।

(२७)रेवती- प्रभूतमणीकनकवस्तुलाभ:।

**व.सं.-सूर्यादिवारवशाद विशेषत: फलकथनं प्राप्यते। क.सं.-सूर्यादिवारवशात् फलकथनं न प्राप्यते।**

**निष्कर्षः-**

उपर्युक्ततौलनिकाध्ययनेनेदं स्फुटं भवति। यत्-

१) **बृहत्संहिताग्रन्थो वराहमिहिरेण लिखितः** संहितानेकसिद्धान्तसमावेशकस्तथा विस्तृतो वर्तते, तथापि संस्कारादिकाः केचन विषयाः, पञ्चाङ्गस्य केचनविषयास्तेन न विवर्णिताः। तथाप्यन्यविषयाणां समावेशः संहितायां कृतः। कश्यपस्य मतसमुल्लेखोऽपि तेन विहितः।

२) **नारदसंहितायाः** कश्यपसंहितया साकमतिसाम्यं दरिदृश्यते। अनेके विषयाः श्लोकाश्च समानाः। तथाप्यनेकविषयेषु कश्यपस्य नारदस्य च पूर्वचर्चिताः सूक्ष्मभेदाः स्फुटा भवन्ति।

३) **वसिष्ठसंहितायां नैके विषयाः कश्यपेन समाना** दरिदृश्यन्ते, तथापि वसिष्ठस्य विवरणमतिविस्तृतं दृश्यते। संस्कार-पञ्चाङ्ग-वास्त्वादिविषयेषु साम्यं दृश्यते। स्थाने स्थाने तयोर्मध्ये स्थूलमानेन सूक्ष्ममानेन वा भेदाः सन्ति। तेषां विश्लेषणं चर्चा च पूर्वमेव कृता।

४) **जैनसम्प्रदायप्रभावितस्य भद्रबाहुसंहिताग्रन्थस्य** प्रायेण भिन्नत्वं सर्वथा दृष्टिगोचरं भवति। संस्कार-पञ्चाङ्ग-वास्तु-उत्पातशान्त्यादि-विविधविषयाणामभावः, जैनमूर्ति-विषयकं विवेचनं -इत्यादिभिः कश्यपसंहितायाः साकं तस्या विषयवैरूप्यं निश्चप्रचं सिद्ध्यति।

कश्यपसंहिताया महत्त्वं वैशिष्ट्यं चान्यसंहिताभ्यः साम्यभेदावित्यादिक-मुपर्युक्तविश्लेषणेन सिद्धं भवति -इत्यस्य प्रकरणस्य फलितम्।